Digitized by eGangotri

आलोक पुस्तकमाला

[redacted]

१

रसखान-रत्नावली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आलोक पुस्तकमाला सं० १

रसखान-रत्नावली

अर्थात्

भक्तवर रसखान का जीवनचरित्र एवं उनकी सुललित रसमयी रचनाओं का संग्रह

संकलनकर्ता

श्रीयुत "कविकिङ्कर"

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

मुद्रक और प्रकाशक

भारतवासी प्रेस, इलाहाबाद।

१९४१

प्रथम आवृत्ति १०००] [मूल्य ।॥)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भूमिका

काव्यरसिक भक्तों के कर कमलों में 'रसखान रत्नावली' प्रस्तुत करते हुए हमे अपार आनन्द हो रहा है। यह रचना कुल १८३ छन्दों में समाप्त है। इतनी छोटी होते हुए भी यह इतनी सुन्दर और रसाप्लावित है कि इसको सम्पादन करने का लोभ संवरण करना कठिन हो जाता है। सबसे पहले गोस्वामी किशोरीलालजी ने बाँकीपुरस्थ खड्गबिलास प्रेस से 'रसखान शतक' नाम का एक संग्रह प्रकाशित कराया था, पर उसका अब नाम मात्र रह गया है। बहुत ढूंढ़ने पर भी हमें वह संग्रह न मिल सका। इससे हमारा यह अनुमान है कि यदि वह संग्रह सर्वथा दुर्लभ नहीं है तो सहसा उपलब्ध भी नहीं है।

सन् १९०८ में गोस्वामी किशोरीलाल ने रसखानजी की उपलब्ध रचनाओं का संकलन करके 'सुजान रसखान' नाम का एक नया संग्रह भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित कराया, जो अब भी प्राप्य है। कालान्तर में गोस्वामीजी को रसखान के कुछ दोहे प्राप्त हुए जिनका संग्रह 'प्रेमवाटिका' नाम से पहले तो हरिप्रकाश यंत्रालय से प्रकाशित कराया गया और फिर हित-चिन्तक यंत्रालय से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

acc: no 19507
Rs 0-12-0
236

मुद्रक—प्रतापनारायण चतुर्वेदी, भारतवासी प्रेस, दारागंज—प्रयाग

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कविवर रसखान का जीवनचरित्र

भक्तवर रसखान के जीवनचरित्र के सम्बन्ध में अब तक कोई बात निश्चित रूप से नहीं कही जा सकती। इस सम्बन्ध में जो कुछ सामग्री संकलित की गई है वह सब आन्तर्यसाक्ष्य एवं किम्वदन्तियों के आधार पर अवलम्बित है। क्योंकि ऐतिहासिक साक्ष्य के अभाव से अन्त में इन्हीं का आश्रय लेना पड़ता है। आलोचक प्रवर मिश्रबन्धु के मतानुसार रसखानजी का जन्म संवत् १६१५ के लगभग हुआ होगा। इस अनुमान का आधार यह है कि रसखानजी ने गोस्वामी विट्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण की थी, विट्ठलनाथजी का देहावसान विक्रमाब्द १६४३ में हुआ। यदि रसखान ने संवत् १६४० में दीक्षा ग्रहण की हो और उस समय कुछ रचना भी की हो, तो गणना के अनुसार (१६४०–२५=१६१५) सं० १६१५ इनका जन्मकाल निकलता है। यह वृद्धावस्था तक जीवित रहे। संवत् १६७१ तक तो यह रचना ही करते रहे। इनकी 'प्रेमवाटिका' इसी वर्ष तैय्यार हुई, उसमें निम्मांकित दोहा इसी आशय पर दिया हुआ है।

१ ७ ६ १

बिधु सागर रस इंदु सुभ, बरस सरस रसखानि।
प्रेम बाटिका रचि रुचिर, चिर हिय हरष बखानि॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रसखान की रचनाओं की ओर काव्यप्रेमी भक्तों का उत्तरोत्तर अनुराग देख कर काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अमीर सिंहजी से आग्रह करके एक और संग्रह प्रकाशित कराया। एक छोटी सी रचना के बहुत से संस्करण उसकी लोकप्रियता एवं साहित्य सौन्दर्य के प्रत्यक्ष प्रमाण और परिचायक हैं। इतने संस्करणों के रहते हुए प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन के सम्बन्ध में प्रश्न उपस्थित किया जा सकता है, उत्तर में इतना ही नम्र निवेदन है कि रसखानजी की रसाप्लावित रचनाओं की ओर पाठकों का उत्तरोत्तर अनुराग देखकर ही हमने प्रस्तुत पुस्तक उपस्थित की है और इसमें अपनी निजी विशेषता भी है। छन्दों का वर्गीकरण यथासाध्य विषय अनुकूल किया गया है। यद्यपि मुक्तक रचना को विषयबद्ध करना कठिन है, पर पाठकों के मनोविनोदार्थ हमने यथासाध्य ऐसा करने का उद्योग किया है। यदि पाठक इससे लाभ उठावेंगे तो हम अपने प्रयास को सफल समझेंगे और आगे चलकर कविवर घनानन्द की रसमयी रचनाओं का संक्षिप्त संग्रह उनके कर कमलों में उपस्थित करने का उद्योग करेंगे।

प्रयाग
अगहन कृष्ण अमावस्या १६६७

— लेखक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा वंस की, ठसक छाँड़ि रसखान ॥
प्रेम निकेतन श्री बनहिं, आइ गोवर्द्धन धाम।
लह्यो सरन चित चाहि कै, युगुल सरूप ललाम ॥

अर्थात् राज्याधिकार के लिये दिल्ली में घोर विप्लव देखकर रसखान ने राज्यवंशोचित गौरव पर लात मार कर वैराग्य धारण किया था। रसखान की यह उक्ति ऐतिहासिक कसौटी पर कसने से बहुत खरी नहीं उतरती। उन्होंने संवत् १६४० के लगभग दिल्ली से आकर गोस्वामी विट्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण की थी इस समय दिल्ली के सिंहासन पर सम्राट अकबर सुशोभित थे जिनके राजत्वकाल में कोई ऐसी भीषण राज्यक्रान्ति नहीं हुई, जिसमें दिल्ली नगर मसान हो गया होता। हमारे अनुमान से रसखान ने थोड़ी सी अशान्ति को राज्यक्रान्ति का रूप दे रक्खा है। यह अशान्ति अकबर के सौतेले भाई मिर्ज़ा मुहम्मद हकीम के असंतोष के कारण हुई थी, जो काबुल के शासक होते हुए भी दिल्ली के सिंहासन पर अपना दाँत लगाये हुए थे। इनके दरबारी भी अकबर के विरुद्ध इन्हें भड़काते रहते थे। फलतः सं० १६३८ में अकबर ने अफग़ानिस्तान पर आक्रमण करके अपने अधिकार में कर लिया और सं० १६४२ में मिर्ज़ा हकीम की मृत्यु के अनन्तर उसे दिल्ली राज्य का सूबा बना लिया। इसी अशान्ति को रसखान ने राज्यक्रान्ति कहा है।

रसखानजी के सम्बन्ध में तीन किम्वदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अर्थात् प्रेमबाटिका की समाप्ति, विधु=१। सागर=७। रस=६। इंदु=१।=१६७१ में हुई।

प्रेमबाटिका की रचना के अनन्तर रसखानजी ने और कोई रचना की अथवा नहीं की, इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है पर अन्य किसी रचना के उपलब्ध न होने से और ५६ वर्ष की अवस्था पर विचार करने से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि कदाचित् इन्होंने इसके उपरान्त कोई और रचना नहीं की। पर साथ ही साथ जब भक्त कवियों के स्वभाव पर विचार करते हैं तब तो यह अनुमान होने लगता है, कि चुप बैठे रहना तो उनकी प्रवृत्ति के प्रतिकूल है। सूर, तुलसी और केशव आदि तो वृद्धावस्था तक कविता करते रहे। दुर्भाग्यवश रसखानजी की अन्य रचनायें उपलब्ध नहीं हैं, इसलिये भले ही 'प्रेमबाटिका' इनकी अन्तिम रचना मान ली जाय, अन्यथा यह भी कहा जा सकता है कि इसके अनन्तर भी इन्होंने रचनायें की होंगीं, जो कराल काल के गाल में चली गई हैं। यदि हम यह मान लें कि रसखानजी वृद्धावस्था अर्थात् ७० वर्ष तक जीवित रहे तो हमारी गणना के अनुसार रसखानजी का देहावसान (१६१५+७०)=१६८५ के लगभग हुआ होगा।

जैसा ऊपर कह आये हैं, रसखान ने सम्वत् १६४० में दीक्षा ग्रहण की। इससे कुछ ही पहले इनके हृदय में वैराग्य का अंकुर जमा होगा, जैसा कि रसखान ने अपनी प्रेमबाटिका में लिखा है—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पंडित जी से यह पता पाकर रसखान वृन्दावन चले आये, और वहीं पर भगवान को ढूंढ़ने लगे। इन्हे किसी ने मंदिर में न जाने दिया। तबतो यह निराश होकर अन्न जल का परित्याग करके यमुना के पुलिन पर बैठ कर भगवन्नाम उच्चारण करने लगे। कहते हैं तीन दिनों के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने इन्हें दर्शन दिये। यह बराबर भगवान श्रीकृष्ण की लीला प्रत्यक्ष देखते रहे। लोगों का तो यहाँ तक कहना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं इनका अन्त्येष्ठि संस्कार भी किया था। जो हो भक्तों के मनोविनोद के लिये इस आख्यायिका में पर्याप्त सामग्री है। अंग्रेजी शिक्षा दीक्षित बाबू वर्ग भले ही इस पर विश्वास करे या न करे यह उसके मन की बात है।

दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता में भी रसखान का उल्लेख बड़ी श्रद्धा के साथ किया गया है। उस समय यह गोसांई जी के दो सौ पचीस प्रमुख शिष्यों में गिने जाते थे; और इनको परम श्रेष्ठ वैष्णव समझ कर गोस्वामी गोकुलनाथ ने दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता में दो सौ अट्ठारहवें नम्बर पर इन्हें स्थान दिया है। वार्ता में रसखानजी का जीवन चरित इस प्रकार दिया गया है—

रसखान सैयद पठान जो एक साहूकार के छोरा पर आसक्त हते सो वाके देखे बिना रह्यो न जातो और वा छोरा को जूठो आप खाते पीते। सो जाति के लोग सब निंदा करते, परंतु काहु की सुनै नाहीं। सो यह प्रकार देख के एक वैष्णव ने माथा हिलायो नाक चढ़ायो। तब वैष्णव ने कह्यो तुम या छोरा पै आसक्त हो याते ऐसो मन प्रभु तें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कुछ लोगों का मत है कि पहले इनका जीवन अधिक संयत न था। यह किसी मानवती स्त्री के प्रेमपाश में दृढ़तया आबद्ध थे और ऐसी बुरी तरह से जकड़े हुए थे कि उसके द्वारा निरन्तर तिरस्कृत होने पर भी यह अपना अनुरागबन्ध शिथिल नहीं करते थे। परन्तु एक दिन सहसा इनके हृदय में नया भाव उत्पन्न हो तो हुआ।

कहते हैं कि एक दिन रसखान श्रीमद्भागवत का फारसी में अनुवाद कर रहे थे, उसमें गोपियों के विरह वर्णन वाले प्रसंग का अनुवाद करते हुए इनके हृदय में यह भाव सहसा उत्पन्न हुआ कि जिसके सौन्दर्य पर रूपराशि गोपियों का समूह इस प्रकार मुग्ध था उसके दर्शन हम क्यों न करें, जब कि वह वृन्दावन में स्थायी रूप से निवास करता है। इस विचार से प्रेरित होकर रसखान दिल्ली छोड़ कर वृन्दावन चल आये; और यहीं भगवान कृष्ण के भक्ति सागर में निमग्न होकर सानन्द जीवन व्यतीत करने लगे। रसखान के सम्बन्ध में दूसरी किम्वदन्ती भी इसी प्रकार की है।

तीसरी किम्वदन्ती में कहा गया है कि कहीं श्रीमद्भागवत का पारायण हो रहा था; वहीं पर मुरली मनोहर का एक मनोरम चित्र भी सजाया गया था। वह चित्र इतना समाकर्षक था कि कथा के अनन्तर रसखान ने पंडितजी से उसके विषय में प्रश्न किया। पंडितजी ने उत्तर दिया कि इनके विषय में तुम क्या पूछते हो यों तो इनका निवास सर्वत्र है पर विशेषतः यह वृन्दावन में रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ताको मैं अंगीकार करूँगो सो सुनि तुरत गुसांईजी घोड़ा पै सवार होइके गोविंद कुंड पधारे। तब रसखान ने उठि ठाढ़ो होय गुसांई जी से बिनती कीन्हीं जा या मंदिर में महबूब है सो तुम्हारो बड़ो मित्र है तुम कृपा करि दरसन कराय मिलाओ तो बहुत अच्छी है। तब आपने रसखान को न्हाइबे की आज्ञा दीन्हीं। पीछे नाम सुनाय श्री जी के दरसन करवाये। जब बाहर निकसिबे लगे तब श्रीनाथजी ने रसखानजी की बाँह पकरी कह्यो, अरे अब कहाँ जात है? पाछे ता दिन ते श्री जी गोचारण को पधारते तब रसखान को सग ले जाते। सो रसखान जैसी लीला के दरसन करते तैसी पर दोहा कवित्त कार सुनावते। सो प्रभु प्रसन्न होते। प्रेमी जनन की बात न्यारी है उनकी बलिहारी है। अहा "इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदू वारिए"।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि एक बार रसखान अन्य पठानों के साथ हज्ज की यात्रा के लिये निकले। मार्ग में जब वृन्दावन में आकर ठहरे वहीं पर भगवान कृष्ण के चरणारविन्दु में इनका प्रेम हो गया, पर कैसे हुआ इस विषय में कोई उल्लेख नहीं किया गया है। प्रातःकाल इन्होंने अपने सहयोगियों से कहा कि आप लोग सानन्द हज्ज की यात्रा करें, मैं तो अब इस व्रज भूमि को छोड़ कर और कहीं नहीं जाऊँगा इस प्रकार अपने साथियों को विदा करके रसखान वृन्दावन में रहने लगे। धीरे २ यह समाचार सम्राट अकबर के कानों में पहुँचा। पर जब रसखान को इस बात का पता चला कि इन्हें लोग काफिर बताकर जागीर जप्त कराने के फेर में है, तब भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लगावते तो तुम्हारो काम ह्वै जातो। तब रसखान ने पूछ्यो, प्रभु कोन है। तब वैष्णव ने कही जाको यह सब विभूति है। तब रसखान ने पूंछी वे कहाँ रहत हैं? तब कह्यो ब्रज में रहत हैं। फेर वैष्णव ने अपनी पाग में ते एक श्री जी को चित्र निकारि कै दरसन करायो सो चित्र में मुकुट काछनी कौ शृंगार हतो। सो दर्शन करत रसखान को मन वा छोरा ते फिर्‌यो और चित्र में लग्यो।

तब तो नेत्रन तें आँसू की धारा चली। तबतो वहाँ ते ब्रज को आये और वा वैष्णव तें श्री जी को चित्र मांग्यो। सो वैष्णव ने इनको दैवी जीव जानि चित्र दियो। तब रसखान सब देवालय में जाय दर्शन कर्‌यो और वा चित्र को देख्यो, पर वा चित्र के समान स्वरूप कहूँ न देख्यो। तब गिरिराज में आप श्री जी के मंदर में जाइबे लगे सो पौरिया ने धक्का मार निकास दियो, भीतर पैठवे न दियो। तब रसखान ने जान्यो जो महबूब याही मंदिर में है सो गोविंद कुंड पर जाय मंदिर की ओर टकटकी लगाय बैठे, जो बिना दर्शन करे अन्न जल कुछ न लेउगो सो तीन दिन या भाँति बीते। तब श्री जी को दया आई, जो यह भूखो मर जायगो सो चित्र में जैसो शृंगार हतो तैसो लाय ग्वाल गाय संग लै रसखान को दरसन दियो और वेणुनाद कियो। तब झट रसखान दरसन करत दौर के श्री जी के पकरिबे को आयो, सो श्री जी अंतर्धान होय गयो और श्री गुसांईजी ते आय कह्यो जो एक दैवी-जीव बड़ो जात को तीन दिन ते भूखो गोविंद कुंड पर बैठ्यो है, सो मैंने वाको दर्शन दिये, सो मोको स्पर्श करिबे को दौड़्यो सो मैं भजि आयो, तुमारे अंगीकार करे बिना मैं कैसे वाकू स्पर्श करूँ। जाको तुम नाम निवेदन कराओगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

जीवनचरित
कवित्त
सवैया
दोहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मानस हौं तौ वही रसखानि,
    बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरा,
    चरौं नित नंद कि धेनु मँझारन ।
पाहन हौं तो वही गिरि को,
    जो भयो ब्रज-छत्र पुरंदर कारन ।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं,
    उन कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रसखान रत्नावली

(१)

एरी आजु कालिह सब लोक लाज त्यागि दोऊ
सीखे हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो ।
यह 'रसखान' दिना द्वै में बात फैलि जैहै,
कहाँ लों सयानी चंदा हाथन छिपाइबो ॥
आजु हौं निहार्‍यो बीर निपट कलिंदी तीर,
दोउन को दोउन सों मुरि मुसिकाइबो ।
दोऊ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ इन्हैं,
भूलि गईं गैयाँ उन्हैं गागर उठाइबो ॥

(२)

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल,
आगे गैया पाछे ग्वाल गावै मृदु तान री ।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर तैसी,
बंक चितवनि मंद मंद मुसकानि री ॥
कदम बिटप के निकट तटनी के आय,
अटा चढ़ि चाहि पीतपट फहरानि री ।
रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन,
प्रानि रिझावै वह आवै 'रसखानि' री ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५)

दूध दुह्यो सीरो पर्‍यो तातो न जमायो कर्‍यो,
जामन दयो सो धर्‍यो धर्‍योई खटाइगो।
आन हाथ आन पाइ सबहीं के तबहीं तें,
जबहीं ते 'रसखानि' तानन सुनाइगो॥
ज्यौंही नर त्यौंही नारी तैसी ये तरुन बारी,
कहिए कहा री सब व्रज बिललाइगो।
जानिए न आली यह छोहरा जसोमति को,
बाँसुरी बजाइगो कि विष बगराइगो॥

(६)

अधर लगाय रस प्याय बाँसुरी बजाय,
मेरो नाम गाय हाय जादू कियो मन में।
नटवर नवल सुधर नंदनंदन ने,
करिकै अचेत चेत हरि कै जतन में॥
झटपट उलट पुलट पट परिधान,
जान लागीं लालन पै सबै बाम बन में।
रस रास सरस रँगीलो 'रसखान' आनि,
जानि जोर जुगुति विलास कियो जन में॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(३)

अबहीं गई खिरक गाइ के दुहाइबे को,
बावरी ह्वै आई डारि दोहनी यौं पानि की ।
कोऊ कहै छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ,
कोऊ कहै मरी गति हरी अँखियान की ॥
सास व्रत ठानै नंद बोलत सयाने धाइ,
दौरि दौरि जानै मानो खोरि देवतानि की ।
सखी सब हँसैं मुरझानि पहिचानि कहूँ,
देखी मुसकानि वा अहीर 'रसखानि' की ॥

(४)

ब्याही अनब्याही ब्रज माँहीं सब चाही तासों,
दूनी सकुचाई दीठि परै न जुन्हैया की ।
नेकु मुसकानि 'रसखानि' की विलोकत ही,
चेरी होत एक बार कुंजनि दिखैया की ॥
मेरो कह्यौ मानि अँत मेरो गुन मानिहैरी,
प्रात खात जात न सकात सौंह भैया की ।
माइ की अटँक जौलौं सासु की हटक तौलौं,
देखी न लटक मेरे दूलह कन्हैया की ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(९)

कंचन के मंदिरनि दीठ ठहरात नाहीं,
सदा दीपमाल लाल मानिक उजारे सौं।
और प्रभुताई अब कहाँ लौं बखानौं प्रति,—
हारन की भीर भूप टरत न द्वारे सौं॥
गंगाजी में न्हाइ मुक्ताहलहू लुटाइ वेद,
बीस बार गाइ ध्यान कीजत सवारे सौं।
ऐसे ही भए तो नर कहा 'रसखानि' जो पै,
चित दै न कीनी प्रीति, पीतपटवारे सौं॥

(१०)

अंत तें न आयो याही गाँवरे को जायो,
माई बावरे जिवायो प्याई दूध बारे बारे को।
सोई 'रसखानि' पहिचानि कानि छाड़ि चाहै,
लोचन नचावत नचैया द्वारे द्वारे को॥
मैया की सौं सोच कछू मटकी उतारे को न,
गोरस के ढारे को न चीर चीर डारे को।
यहै दुख भारी गहै डगर हमारी माझ,
नगर हमारे ग्वाल बगर हमारे को॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७)

ग्वालन संग जैबो बन ऐबो संग गाइन के,
हेरि तान गइबो हाहा नैन फरकत है ।
ह्याँ के गजमोती माल वारौं गुंजमालन पै;
कुंज सुधि आए हाय प्रान धरकत हैं ॥
गोबर को गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारौ,
कहा भयो सोने को जटित मरकत हैं ।
मंदिर ते ऊँचे यह मंदिर हैं द्वारिका के,
ब्रज के खिरक मेरे हिये खरकत हैं ॥

(८)

कहा 'रसखानि' सुखसंपति सुमार कहा,
कहा तन जोगी ह्वै लगाए अंग छार को ।
कहा साधे पंचानल कहा सोए बीच नल,
कहा जीत लाए राजसिधु आर पार को ॥
जप बार बार तप संजम बयार ब्रत,
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को ।
कीन्हों नहीं प्यार नहीं सेयो दरबार चित्त,
चाह्यो न निहारो जो पै नंद के कुमार को ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१३)

गोकुल को ग्वाल काल्हि चौमुंह की ग्वालिन सों,
चांचर रचाइ एक धूमहिं मचाइगो ।
हियो हुलसाय 'रसखानि' तान गाइ बाँकी,
सहज सुभाइ सब गाँव ललचाइगो ॥
पिचका चलाइ और जुवती भिंजाइ नेह,
लोचन नचाइ मेरे अंगहि बचाइगो ।
सासहिं नचाइ भोरी नंदही नचाइ खोरी,
बौरिन सचाइ गोरी मोहि सकुचाइगो ॥

(१४)

मानुष हौं तो वही 'रसखानि',
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पशु हौं तौ कहा बस मेरो,
चरौं नित नंद की धेनु मंझारन ॥
पाहन हौं तौ वही गिरि को,
जो धर्यो कर छत्र पुरन्दर धारन ।
जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि,
कालिंदी कूल कदंब की डारन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(११)

आपने को ढोंटा हम सबहीं को जानत हैं,
दोऊ प्रानी सबहीं के काज नित धावहीं।
ते तौ 'रसखानि' अब दूर तें तमासो देखैं,
तरनितनूजा के निकट नहिं आवहीं॥
आन दिन बात अनहितुन सों कहौं कहा,
हितू जेऊ आए ते ये लोचन दुरावहीं।
कहा कहौं आली खाली देत सब ढाली पर,
मेरे बनमाली कौं न काली ते छुड़ावहीं॥

(१२)

आई खेलि होरी ब्रजगोरी वा किसोरी संग,
अंग अंग रंगनि अनंग सरसाइगो।
कुंकुम की मार वा पै रंगनि उछार उड़ै,
बुक्का औ गुलाल लाल लाल तरसागो॥
छोड़ै पिचकारिन धमारिन बिगोइ छोड़ैं,
तोड़ै हिय हार धार रंग बरसाइगो।
रसिक सलोनो रिझवार 'रसखानि' आज
फागुन में अवगुन अनेक दरसाइगो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१७)

एक समै मुरली धुनि में,
'रसखानि' लियो कहुं नाम हमारो ।
ता दिन तें परि वैरी बिसासिनी,
झांकन देती नहीं हैं दुवारो ॥
होत चबाव बचाओं सु क्यों करि,
क्यों अलि भेंटिए प्रान पियारो ।
दृष्टि परी तबहीं चटको,
अटको हियरे पियरे पटवारो ॥

(१८)

गावैं गुनी गनिका गंधर्व,
औ सारद सेस सबै गुन गावत ।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं,
ब्रम्हा त्रिलोचन पार न पावत ॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध,
निरंतर जाहि समाधि लगावत ।
ताहि अहीर की छोहरिया,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१५)

या लकुटी अरु कामरिया पर,
राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख,
नंद की गाइ चराइ बिसारौं ॥
'रसखानि' कबौं इन आँखिन सों,
ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ।
कोटि करौ कलधौत के धाम,
करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥

(१६)

मोर पखा सिर ऊपर राखिहौं,
गुंज की माल गरे पहिरौंगी ।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी,
बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी ॥
भावतो वोहि मेरो 'रसखानि' सों,
तेरे कहे सब स्वांग करौंगी ।
या मुरली मुरलीधर की,
अधरान धरी अधरा न धरौंगी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२१)

काह कहूँ सजनी सँग की,
रजनी नित बीतै मुकुंद को हेरी ।
आवन रोज कहैं मनभावन,
आवन की न कबौं करी फेरी ॥
सौतिन भाग बढ़्यो ब्रज में,
जिन लूटत हैं निसि रंग घनेरी ।
मो 'रसखानि' लिखी विधना मन,
मारिकै आपु बनी हौं अहेरी ॥

(२२)

कौन ठगौरी भरी हरि आजु,
बजाई है बांसुरिया रँग भीनी ।
तान सुनी जिनहीं तिनहीं,
तबहीं तिन लाज बिदा करि दीनी ॥
घूमै घड़ी घड़ी नंद के द्वार,
नवीनी कहा कहूँ बाल प्रवीनी ।
या ब्रजमंडल में 'रसखानि',
सु कौन भटू जो लटू नहिं कीनी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१९)

खेलत भाग सुहाग भरी,
अनुरागहिं लालन कों धरि कै।
मारत कुंकुम केसरि के,
पिचकारिन में रँग को भरि कै॥
गेरत लाल गुलाल लली,
मनमोहिनी मौज मिटा करि कै।
जात चली 'रसखानि' अलीं,
मदमस्त मनौ मन कों हरि कै॥

(२०)

कान्ह भए बस बांसुरी के,
अब कौन सखी हमकों चहिहैं।
निस द्यौस रहै संग साथ लगी,
यह सौतिन तापन क्यौं सहिहैं॥
जिन मोहि लियो मनमोहन को,
'रसखानि' सदा हमको दहिहैं।
मिलि आओ सबै सखी भाग चलैं,
अब तो ब्रज मैं बंसुरी रहिहैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२५)

एक तैं एक लौं काननि मै रहै,
ढीठ सखा सब लीन्हें कन्हाई।
आवत ही हैं कहाँ लौं कहों,
कोउ कैसें सहै अति की अधिकाई॥
खायो दही मेरो भाजन फोर्‌यो,
न छोड़त चीर दिवावै दुहाई।
'रसखानि' तिहारी सौं एरी जसोमति,
भागे मरू करि छूट न पाई॥

(२६)

लोक की लाज तजी तबहीं,
जब देख्यो सखी ब्रजचंद सलोनो।
खंजन मीन सरोजन की छबि,
गंजन नैन लला दिन होनो॥
'रसखानि' निहारि सकें जु सम्हारि कै,
को तिय है वह रूप सुठोनो।
भौंह कमान सों जौहंन को सब,
बेधत प्राननि नंद को छौनो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२३)

आजु गई हुती भोरही हौं,
'रसखानि' रई कहि नंद के भौंनहिं ।
वाको जियौ जुग लाख करोर,
जसोमति को सुख जात कह्यो नहिं ॥
तेल लगाइ लगाइ कै अंजन,
भौंह बनाइ बनाइ डिठौनहिं ।
डालि हमेलनि द्वार निहारत,
वारत ज्यौं चुचकारत छौनहिं ॥

(२४)

बंसी बजावत आनि कढ़ौ,
सो गली मैं अली कछु टौना सों डारैं ।
हेरि चितै तिरछी करि दीठि,
चलो गयो मोहन मूठि सी मारैं ॥
ताही घरी सों परी धरी सेज पै,
प्यारी न बोलति प्रानहुँ वारैं ।
राधिका जीहै तौ जीहैं सबै,
न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२९)

बारहीं गोरस बेंचि री आजु,
तूं माइ के मूड़ चढ़ै कत मौड़ी।
आवत जात लौं होयगी साँझ,
भटू जमुना भतरौंड लों औंड़ी॥
ऐसे में भेंटत ही 'रसखानि',
ह्वै हैं आँखियाँ बिन काज कनौड़ी।
एरी बलाइ त्यों जाइगीं बाजि,
अबै ब्रजराज सनेह की डौड़ी॥

(३०)

सोहत हैं चँदवा सिर मौरि के,
जैसियै सुंदर पाग कसी है।
तैसियै गोरज भाल बिराजति,
जैसी हिये बनमाल लसी है॥
'रसखानि' बिलोकत बौरी भई,
दृग मूँदि कै ग्वालि पुकारि हँसी है।
खोलि री घूंघट खोलौं कहा,
वह मूरति नैनन माँझ बसी है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२७)

मंजु मनोहर मूरि लखै,
तबहीं सबहीं पतिहीं तजि दीनी।
प्रान पखेरू परे तलफैं,
वह रूप के जाल में आस अधीनी॥
आँख सों आँख लड़ी जबहीं,
तब से ये रहैं अँसुवा रंग भीनी।
या 'रसखानि' अधीन भईं,
सब गोप लली तजि लाज नवीनी॥

(२८)

सुन री पिय मोहन की बतियाँ,
अति ढीठ भयो नहिं कानि करै।
निसि बासर औसर देत नहीं,
छिनहीं छिन द्वारे ही आनि अरै॥
निकसो मति नागरि! डौंडी बजी,
ब्रजमंडल में इह कौन भरै।
अब रूप की रौरि परी 'रसखानि'
रहै तिय कोऊ न मांझ घरै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(३३)

भौंह भरी बरुनी सुथरी,
अतिसै अघरानि रँगी रँग रातौ ।
कुंडल लोल कपोल महाछबि,
कुंजनि तें निकस्यो मुसिकातौ ॥
'रसखानि' लखे मग छूटि गयो,
डग भूलि गई तन की सुधि सातौ ।
फूटि गयो दधि को सिर भाजन,
टूटिगो नैननि लाज को नातौ ॥

(३४)

अँखियाँ अँखियाँ सो सकाय मिलाय,
हिलाय रिझाय हियो भरिबो ।
बतियाँ चित चोरन चेटक सी,
रस चारु चरित्रन ऊँचारिबो ॥
'रसखानि' के प्रान सुधा भरिबो,
अधरान पै त्यों अधरा धरिबो ।
इतने सब मैन के मोहनी जंत्र पै,
मंत्र बसीकर सी करिबो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(३१)

धूर भरे अति सोभित स्याम जू,
तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अँगना पग,
पैंजनी बाजती पीरी कछोटी ॥
वा छबि को 'रसखानि' बिलोकत,
वारत काम कला निज कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी,
हरि हाथ सौं लै गयौ माखन रोटी ॥

(३२)

आयो हुतो नियरें 'रसखानि'
कहा कहूँ तू न गई वह ठैया ।
या ब्रज में सिगरी बनिता,
सब वारति प्राननि लेत बलैया ॥
कोऊ न काहू की कानि करै,
कछु चेटक सो जु कर्यौ जदुरैया ।
गाइगो तान जमाइगो नेह,
रिझाइगो प्रान चराइगो गैया ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४१)

खंजन नैन फँदे पिंजरा,
छबि नाहिं रहै थिर कैसहूँ माई ।
छूट गई कुलकानि सखी,
'रसखानि' लखी मुसिकानि सुहाई ॥
चित्र कढ़े से रहैं मेरे नैन,
न बैन कढ़ै मुख दीनी दुहाई ।
कैसी करौं जिन जाव अली,
सब बोलि उठैं यह बावरी आई ॥

(४२)

उनहों के सनेहन सानी रहैं,
उनहीं के जु नेह दिवानी रहैं ।
उनहीं की सुनै न औ बैन त्यौं सैन,
सों चैन अनेकन ठानी रहैं ॥
उनहीं सँग डोलन ये 'रसखानि',
सबै सुख सिंधु अघानी रहैं ।
उनहीं बिन ज्यों जलहीन ह्वै मीन सी,
आँखि मेरी अंसुवानी रहैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(३९)

ब्रम्ह मैं ढूंढ़्यो पुरानन गानन,
वेद रिचा सुनि चोगुने चायन ।
देख्यो सुन्यो कबहूँ न कितूं,
वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन ॥
टेरत हेरत हारि पर्‌यो,
'रसखानि' बतायो न लोग लुगायन ।
देखो दुरो वह कुंज कुटीर मैं,
बैठो पलोटत राधिका पायन ॥

(४०)

देखन को सखी नैन भए,
न सने तन आवत गाइन पाछैं ।
कान भए इन बातन के,
सुनिबे कों अमीनिधि बोलन आछैं ॥
पै सजनी न सम्हारि परै,
वह बांकी बिलोकन कोर कटाछैं ।
भूलि गयो न हियो मेरी आली,
जहां पिय खेलत काछिनी काछैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४५)

दोउ कानन कुंडल मोरपखा,
सिर सोहै दुकूल नयो चटको ।
मनिहार गरे सुकुमार धरे,
नट भेस अरे पिय को टटको ॥
सुभ काछनी बैजनी पैजनी पामन,
आमन मै न लगै झटको ।
वह सुंदर को 'रसखानि' अली,
जु गलीन में आइ अवै अंटको ॥

(४६)

बंक बिलोकनि है दुखमोचन,
दीरघ लोचन रंग भरे हैं ।
घूमती बारुनी पान किये,
जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनि पै किलकै छबि कुंडल,
नागरि नैन बिलोकि अरे हैं ।
'रसखानि' हरै ब्रजबालनि कों,
मनु ईसत हासि के पानि परे हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४३)

सेस गनेस महेस दिनेस,
सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं ।
जाहि अनादि अनंत अखंड,
अछेद अभेद सुबेद बतावैं ॥
नारद से सुक व्यास रहैं,
पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं ।
ताहि अहीर की छोहरियाँ,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥

(४४)

शंकर से सुर जाहि भजैं,
चतुरानन ध्यान में धर्म बढ़ावैं ।
नेक हिये में जो आवत ही,
'रसखान' महा जड़ मूढ़ कहावैं ॥
जा पर संुदर देवबधू,
नहिं बारत प्रान अबार लगावैं ।
ताहि अहीर की छोहरियाँ,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥

14587

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४९)

जा दिन तें मुसिकानि चुभी उर,
ता दिन तें जु भई बनवारी ।
कुंडल लोल कपोल महाछबि,
कुंजन तें निकस्यो सुखकारी ॥
हौं सखी आवत ही बगरै पग,
पैंड तजी रिझई बनवारी ।
'रसखानि' परी मुसकानि के पानि,
न कौन गहै कुल कानि बिचारी ॥

(५०)

मैन मनोहर बैनु बजै सु
सजे तन सोहत पीत पटा है ।
यों दमकै चमकै झमकै दुति,
दामिनि की मनो स्याम छटा है ॥
ए सजनी ब्रजराजकुमार,
अटा चढ़ि फेरत लाल बटा है ।
'रसखानि' महा मधुरी मुख की,
मुसकानि करै कुलकानि कटा है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४७)

अति लोक की लाज समूह मै घेरि कै,
राखि थकी भव संकट सों ।
पट मैं कुलकानि की मेड़ नखी,
नहि रोकी रुकी पल के पट सों ॥
'रसखानि' सों केतो उचाटि रही,
उचटी न संकोच की औचट सों ।
अलि कोटि कियो हटकी न रही,
अटकी अँखियाँ लटकी लट सों ॥

(४८)

आजु सखी नंदनंदन री,
तकि ठाढ़ो है कुंजनि की परछाहीं ।
नैन विसाल की जोहन को,
सर बेधि गयो हियरा जिय माहीं ॥
घायल घूमि सुमार गिरी,
'रसखानि' सम्हारत अंगन नाहीं ।
तापर वा मुसिकानि की डौंड़ी,
बजै ब्रज मैं अबला कत जाहीं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५३)

कौन को लाल सलोनो सखी वह,
जाकी बड़ी अँखियाँ अनियारी ।
जोहन बंक बिसाल के बाननि,
बेधत हैं घट तीछन भारी ॥
'रसखानि' सम्हारि परै नहिं चोट,
सु कोटि उपाय करौं सुखकारी ।
भाल लिख्यो बिधि हेत को बंधन,
खोलि सकै अस को हितकारी ॥

(५४)

नैन लख्यो जब कुंजन तें,
बन तें निकस्यो अँटक्यो मटक्यो री ।
सोहत कैसे हरा टटकौ,
अरु जैसो किरीट लख्यो लटक्यो री ॥
'रसखानि' रहै अँटक्यो हरक्यो,
ब्रजलोग फिरैं सटक्यो भटक्यो री ।
रूप सबै हरि वा नट को,
हियरे फटक्यो झटक्यो अँटक्यो री ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५१)

सुंदर स्याम सिरोमनि मोहन,
जोहन मैं चित चोरत है ।
बाँके बिलोकनि की अवलोकनि,
नोकनि कै दृग जोरत है ॥
'रसखानि' महावर रूप सलोने को,
मारग तें मन मोरत है ।
ग्रहकाज समाज सबै कुल लाज,
लला ब्रजराज को तोरत है ॥

(५२)

नैननि बंकनि साल के बाननि,
झेलि सकै अस कौन नवेली ।
बेधत है हित तीछन कोर,
सुमारि गिरी तिय कोटिक हेली ॥
छोड़ै नहीं छिनहूँ 'रसखानि'
सु लागी फिरै द्रुम सों जनु बेली ।
रौर परी छबि की ब्रजमंडल,
कुंडल गंडनि कुंतल केरी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५७)

जा दिन तें वह नंद को छोहरो,
या बन धेनु चराइ गयो है।
मीठिहीताननि गोधन गावत,
बैन बजाइ रिझाइ गयो है॥
वा दिन सों कछु टोना सों कै,
'रसखानि' हिये में समाइ गयो है।
कोउ न काहु की कानि करै,
सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है॥

(५८)

रंग भर्‌यो मुसकात लला,
निकस्यो कल कुंजनि तें सुखदाई।
मैं तबहीं निकसी घर तें,
तकि नैन बिसाल की चोट चलाई॥
'रसखानि' सो घूमि गिरी धरती,
हरिनी जिमि बान लगे गिरि जाई।
टूटि गयो घट को सब बंधन,
छूटिगो आरज—लाज—बड़ाई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५५)

बजी है बजी 'रसखानि' बजी,
सुनि कै अब गोपकुमारि न जीहै ।
न जीहै कोऊ जो कदाचित कामिनी,
कानि मैं वाकी जू तान कूं पीहै ॥
कु पीहै बिदेस संदेस न पावति,
मेरीऽब देह को मैन सजी है ।
स जीहै तो मेरो कहा बस है,
सु तो बैरिनि बांसुरी फेरि बजी है ॥

(५६)

कानन दै अंगुरी रहिबो,
जबही मुरली धुनि मंद बजैहै ।
मोहनी तानन सों 'रसखानि'
अटा चढ़ि गोधन गैहै तो गैहै ॥
टैरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि,
काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै ।
माइ री वा मुख की मुसकानि,
सम्हारि न जैहै न जैहै न जैहैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(६१)

मकराकृत कुंडल गुंज की माल,
वें लाल लसैं पर पाँवरिया।
बछरानि चरावन के मिस भावतो,
दै गयो भावती भाँवरिया॥
'रसखानि बिलोकत ही सिगरी,
भईं बावरियाँ ब्रज डाँवरिया।
सजनी इहिं गोकुल मै बिष सों,
बगरायो है नंद के साँवरिया॥

(६२)

आजु भटू इक गोपकुमार ने,
रास रच्यो इक गोप के द्वारै।
सुंदर बानिक सो 'रसखानि'
बन्यो वह छोहरा भाग हमारै॥
ए बिधना जो हमैं हँसती अब,
नेकु कहूँ उन के पग धारै।
ताहि बदौं फिरि आवे घरै,
बिनही तन औ मन जोबन वारै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५९)

हेरति बारहिं बार उतै,
तुव बावरी बाल कहाधौं करैगी ।
जौं कबहूँ 'रसखानि' लखै फिर,
क्यों हू न बीर री धीर धरैगी ॥
मानि है काहू की कानि नहीं,
जब रूप ठगी हरि रंग ढरैगी ।
याते कहूँ सिख मानि भटू,
यह हेरनि तेरे ही पैंड़ परैगी ॥

(६०)

आजु भटू इक गोपबधू,
भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै ।
मात अघात न देवनि पूजत,
सासु सयानी सयानी पुकारै ॥
यों 'रसखानि' घिर्‌यो सिगरो ब्रज,
कौन को कौन उपाय बिचारै ।
कोउ न कान्हर के कर तें,
वह बैरिनि बाँसुरिआ गहि जारै ॥

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(६५)

आजु री नंदलला निकस्यो,
तुलसी बन तें बन कें मुसकातो ।
देखे बनै न बनै कहते अब,
सो सुख जो मुख मैं न समातो ॥
हौं 'रसखानि' विलोकिबे को,
कुलकानि को काज कियो हिय हातो ।
आइ गई अलबेली अचानक,
ए भटू लाज को काज कहातो ॥

(६६)

ए सजनी वह नंद को सांवरो,
या बन धेनु चराइ गयो है ।
मोहिनिताननि गोधन गाइ कै,
वेनु बजाइ रिझाइ गयो है ॥
ताही घरी कछु टोना सो कै,
'रसखानि' हिए में समाइ गयो है ।
कोऊ न काहू की बात सुनैं,
सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(६३)

वा मुसकान पै आन दियो,
जिय जान दियो वह तान पै प्यारी।
मान दियो मन मानिक के सँग,
वा मुख मंजु पै जोबन वारी॥
वा तन को 'रसखानि' पै री,
तन ताहि दियो नहिं आन बिचारी।
सो मुह मोड़ करी अब का,
हहा लाल लै आज समाज मैं ख्वारी॥

(६४)

वह गोधन गावत गोधन मैं,
जब तें इहि मारग ह्वै निकस्यौ।
तब तें कुलकानि कितीय करौ,
यह पापी हियो हुलस्यौ हुलस्यौ॥
अब तौ जु भई सुभई नहिं होत है,
लोग अजान हँस्यौ सु हँस्यौ।
कोउ पीर न जानत जानत सो,
तिनके हिय मैं 'रसखानि' बस्यौ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(६९)

बाँकी कटाछ चितैबो सिख्यो,
बहुधा बरज्यो हित कै हितकारी ।
तू अपने ढिग की 'रसखानि'
सिखावनि दै दिन हूँ पचिहारी ॥
कौन की सीख सिखी सजनी,
अजहूँ तजि दै बलि जाउं तिहारी ।
नंद के नंदन के फंद मै,
परि जैहै अनोखी निहार निहारी ॥

(७०)

पूरब पुन्यनि तें चितई जिन,
ये अँखियाँ मुसकानि भरी जू ।
कोऊ रहीं पुतरी सी खरी,
कोउ घाट डरी कोउ बाट परी जू ॥
जे अपने घरहीं 'रसखानि',
कहै अरु हौंसनि जाति मरी जू ।
लाल जे बाल बिहाल करी,
ते बिहाल करी न निहाल करी जू ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(६७)

सेरी सुनो मति आइ अली,
उहाँ जौनी गली हरि गावत है।
हरि लैहैं बिलोकत प्रानन कों,
पुनि गाढ़ परै घर आवन है॥
उन तान की तान तनी ब्रज मैं,
'रसखान' सयान सिखावत है।
तकि पाँय धरो रपटाय नहीं,
वह चारो सो डारि फंदावत है॥

(६८)

समझी न कछू अजहूँ हरि सों,
ब्रज नैन नचाइ नचाइ हंसै।
नित सास की सारी उसासनि सों,
दिन हीं दिन माइ की कांति नसै॥
चहुँ ओर बबा की सौं सोर सुनै,
मन मेरेऊ आवति रीस कसै।
पै कहा करौं वा 'रसखानि' बिलोकि,
हियो हुलसै हुलसै हुलसै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७३)

बेनु बजावत गोधन गावत,
ग्वालन के सँग गोमधि आयो।
बाँसुरी मै उन मेरोई नाम,
सुग्वालन के मिस टेरि सुनायो॥
ए सजनी सुनि सास के त्रासनि,
नंद के पास उसासन आयो।
कैसी करौं 'रसखानि' नहीं हित,
चैन नहीं चित चोर चुरायो॥

(७४)

आली पगे जु रँगे रँग संबल,
सोहैं न आवत लालची नैना।
धावत है उतही जित मोहन,
रोके रुकैं नहिं घूंघट ऐना॥
कानन को कल नाहि परै,
सखी प्रेम सों भींजे सुनै बिन बैना।
भई मधु की मखियाँ 'रसखानि' जू,
नेह को बंधन क्यों हूँ छुटै ना॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७१)

बैरिन तो बरजी न रहै,
अबहीं घर बाहर बैर बढ़ैगो ।
टोना सो नंद-ढुटौना पढ़ै,
सजनी तोहि देखि बिशेष बढ़ैगो ॥
सुनिहै सखि गोकुल गाँव सबै,
'रसखानि' तबै इह लोक रढ़ैगो ।
वैस चढ़े घरही रहि बैठि,
अटानि चढ़ै बदनाम चढ़ैगो ॥

(७२)

मोहन की मुरली सुनि कै,
वह बौरी ह्वै आनि अटा चढ़ि झाँकी ।
गोप बड़ेन की डीठि बचाइ कै,
दीठि सों दीठि मिली दुहुघांकी ॥
देखत मोल भयो अँखियान कों,
को करै लाज कुटुंब पिता की ।
कैसे छुटाई छुटैं अंटकी,
'रसखानि' दुहूँ की बिलोकनि बाँकी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७७)

तेरी गलीन में जा दिन तें,
निकसे मन मोहन गोधन गावत ।
ये ब्रज लोग सो कौन सी बात,
चलाइ कै जो नहिं नैन चलावत ॥
वे 'रसखानि' जो रीझिहैं नेकु,
तौ रीझि कै क्यों नवनारि रिझावत ।
बावरी जो पै कलंक लग्यौं तौ,
निसंक ह्वै क्यौं नहिं अंक लगावत ॥

(७८)

औचक दृष्टि परे कहुँ कान्ह जू,
तासौं कहै ननदी अनुरागी ।
सो सुनि सास रही मुख मोरि,
जिठानी फिरै जिय में रिस पागी ॥
नीके निहारि कै देखे न आँखिन,
हौं कबहूँ भरि नैन न जागी ।
मो पछितावो यहै जु सखी,
कि कलंक लग्यो पर अंक न लागी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७५)

मो मन मोहन कों मिलि कैं,
सबहीं मुसकान दिखाय दई।
वह मोहनी मूरति रूपमयी,
सबही चितई तब हौं चितई॥
उन तौ अपने अपने घर की,
'रसखानि' भली बिधि राह लई।
कछु मोहि कों पाप पर्‌यो पल मैं,
पग आवत पौरि पहार भई॥

(७६)

मेरो सुभाव चितैबे कों माइ री,
लाल निहारि कै बंसी बजाई।
वा दिन तें मोहि लागी ठगौरी सी,
लोग कहैं कोई बावरी आई॥
यों 'रसखानि' घिर्‌यो सिगरो ब्रज,
जानत वे कि मेरो जियराई।
जो कोउ चाहै भलौ अपनौ तो,
सनेह न काहू सों कीजियो माई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(८१)

आज अचानक राधिका रूप—
निधान सों भेंट भई बन माहीं ।
देखत दृष्टि परे 'रसखानि',
मिले भरि अंक दिये गल बाहीं ॥
प्रेमपगी बतियाँ दुहुँघां की,
दुहूँ कों लगी अतिही चित चाहीं ।
मोहनी मंत्र बसीकर जंत्र,
हहा पिय की तिय की नहिं नाहीं ॥

(८२)

कोई है रास में नैसुक नाचि कै,
नाच नचाये किए सबको जिन ।
सोई है री 'रसखानि' इहै,
मनुहारिहूँ सूधैं चितौत न हो छिन ॥
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव,
बिलोकि भयो बस हाहा करी तिन ।
औसर ऐसो मिलै न मिलै,
फिर लंगर मोड़ो कनौड़ो करै किन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७९)

मोरपखा मुरली बनमाल,
लख्यौ हिय मै हियरा उमह्यौरी ।
ता दिन तें इन बैरिन कों,
कहि कौन न बोल कुबोल सह्यौरी ॥
तौ 'रसखानि' सनेह लग्यो,
कोउ एक कह्यौ कोउ लाख कह्यौरी ।
और तो रंग रह्यो न रह्यो,
इक रंग रँगी सोई रंग रह्यौरी ॥

(८०)

मोर के पंखन मौर बन्यौ,
दिन दूलह है अली नंद को नंदन ।
श्री वृषभानुसुता दुलही,
दिन जोरी बनी बिधना सुखकंदन ॥
'रसखानि' न आवत मो पै कह्यो,
कछु दोउ फंदे छबि प्रेम के फंदन ।
जाहि बिलोकै सबै सुख पावत,
ये ब्रज जीवन हैं दुखदंदन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(८५)

मोहन के मन भाइ गयो,
इक भाइ सो ग्वालिन गोधन गायो ।
तातैं लग्यो चट चौहट सौं,
हरवाइ दै गात सों गात छुवायो ॥
'रसखानि' लही इक चातुरता,
चुपचाप रही जब लौं घर आयो ।
नैन नचाइ चितै मुसिकाइ,
सु ओट ह्वै जाइ अँगूठा दिखायो ॥

(८६)

नागर छैलहि गोकुल मैं,
मग रोकत संग सखा ढिग तैहैं ।
जाहि न ताहि दिखावति आँखि,
सु कौन गई अब तोसों करैहैं ॥
हाँसी मैं हार रह्यो 'रसखानि जू'
जो कहुँ नैकु तगा टुटि जैहैं ।
एक ही मोती के मोल लला,
सिगरे ब्रज हाटहि हाट बिकैहैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(८३)

आज भटू मुरली बरु के तर,
नंद के साँवरे रास रच्यौ री ।
नैननि सैननि बैननि मैं,
नहिं कोउ मनोहर भाव बच्यौ री ॥
जद्यपि राखन कौं कुलकानि,
सबै ब्रजबालन प्रान तच्यौ री ॥
तद्यपि वा 'रसखानि' के हाथ,
बिकान को अंत लच्यौ पै लच्यौ री ।

(८४)

छीर जो चाहत चीर गहैं,
ए जू लेहु न केतक छीर अचैहौ ।
चाखन के मिस माखन माँगत,
खाहु न माखन केतिक खैहौ ॥
जानत हौं जिय की 'रसखानि',
सु काहे को एतिक बात बढ़ैहौ ।
गोरस के मिस जो रस चाहत,
सो रस कान्ह जू नेकु न पैहौ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(८९)

बिहरैं पिय प्यारी सनेह सने,
छहरैं चुनरी के झवा झहरैं।
सिहरैं नवजोबन रंग अनंग,
सुभंग अपांगनि की गहरैं॥
बहरैं 'रसखानि' नदी रस की,
घहरैं बनिता कुलहू भहरैं।
कहरैं बिरहीजन आतप सों,
लहरैं लली लाल लिए पहरैं॥

(९०)

वह सोई हुती परजंक लली,
लला लीनो सु आय भुजा भरिकै।
अकुलाय के चौंक उठी सु डरी,
निकरी चहै अंकनि तें फरिकै॥
झटका झटकी में फटो पटुका,
दरकी अंगिया मुकता झरिकै।
मुख बोल कढ़ैं रिस से 'रसखानि'
हटो जु लला निबिया घरिकै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(८७)

दानी भये नए माँगत दान,
सुनै जु पै कंस तौ बाँधि के जैहौ।
रोकत हौ बन में 'रसखानि'
पसारत हाथ घनौ दुख पैहौ॥
टूटे छरा बछरादिक गोधन,
जो धन है सु सबै धन दैहौ।
जैहै अभूषन काहू सखी को तो,
मोल छला के लला न बिकैहौ॥

(८८)

आज महूँ दधि बेंचन जात ही,
मोहन रोक लियो मग आयो।
माँगत दान में आन लियो,
सु कियो निलजी रसजोबन खायो॥
काह कहूँ सिगरो री बिथा,
'रसखानि' लियो हंसि कै मुसिकायो।
पाले परी मैं अकेली लली,
लला लाज लियो सु कियो मन चायो॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(९३)

होती जु पै कुबरी ह्याँ सखी,
भरि लातन मूका बकोटती केती।
लेती निकाल हिए की सबै,
नकछेदि कै कौड़ी पिराइ कै देती॥
ऐसी नचाइ कै नाच वा रांड को,
लाल रिझावन को फल पेती।
सेती सदा 'रसखानि' लिए,
कुबरी के करेजनि सूल सी भेती॥

(९४)

जानै कहा हम मूढ़ सबै,
समुझी न तबै जबहीं बनि आई।
सोचत हैं मन ही मन मैं,
अब कीजे कहा बतियाँ जगवाई॥
नीचो भयो ब्रज को सब सीस,
मलीन भई 'रसखानि' दुहाई।
चेरी को चेटक देखहु री हरि,
चेरो कियो धौं कहा पढ़ि माई॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(९१)

लाज के लेप चढ़ाइ कै अंग,
पची सब सीख को मंत्र सुनाइकै।
गाड़रू ह्वै ब्रज लोग थक्यौ,
करि ओषद बेसक सौंह दिवाइ कै॥
ऊधौ सो को 'रसखानि' कहै,
जिन चित्त धरौ तुम एते उपाइ कै।
कारे बिसारे कों चाहै उतार्‌यौ।
अरे विष बावरे राख लगाइ कै॥

(९२)

'रसखानि यहै सुनि कै गुनि कै,
हियरा सत टूक ह्वै फाटि गयो है।
सुतो जानत हैं न कछू हम ह्याँ,
उन वा पढ़ि मंत्र कहाँधौं दयो है॥
सुनु साँची कहैं जिय मैं निज जानि कै,
जानत हो जस कैसो लयो है।
सब लोग लुगाई कहैं ब्रज माहिं,
अरे हरि चेरी को चेरो भयो है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(९७)

प्रान वही जु रहैं रिझि वापर,
रूप वही जिहिं वाहि रिझायो ।
सीस वही जिन वे परसे पद,
अंक वही जिन वा परसायो ॥
दूध वही जु दुहायो री वाही,
दही सु दही जु वही ढरकायो ।
और कहाँ लौं कहौं 'रसखानि' री,
भाव वही जु वही मन भायो ॥

(९८)

कंचन मंदिर ऊँचे बनाइकै,
मानिक लाइ सदा झलकैयत ।
प्रातहीं तें सगरी नगरी,
राजमोतिन ही की तुलानि तुलैयत ॥
जद्यपि दीन प्रजानि प्रजा,
तिनकी प्रभुता मघवा ललचैयत ।
ऐसे भये तो कहा 'रसखानि',
जो सांवरे ग्वाल सों नेह न लैयत ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(९५)

काहूँसों माई कहा कहिए,
सहिए जु सोई 'रसखानि' सहावैं।
नेम कहा जब प्रेम कियो,
तब नाचिए सोई जो नाच नचावैं॥
चाहत हैं हम और कहा सखि,
क्योंहूँ कहूँ पिय देखन पावैं।
चेरिय सों जु गुपाल रच्यो,
तौ चलौरी सबै मिलि चेरी कहावैं॥

(९६)

'रसखानि' सुन्यो है बियोग के ताप,
मलीन महा दुति देह तिया की।
पंकज सो मुख गो मुरझाइ,
लगों लपटैं बिस स्वाँस हिया की॥
ऐसे में आवत कान्ह सुने,
हुलसे सरके तरकी अँगिया की।
यों जग जोति उठी तन की,
उसकाइ दई मनौ बाती दिया की॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१०१)

देस बिदेस के देखे नरेसन,
रीझि की कोऊ न बूझ करैगो।
तातें तिन्है तजि जान गिर्‌यो गुन,
सौ गुन औगुन गांठि परैगो॥
बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है,
स्याम जो नैकु सुढार ढरैगो।
लाड़लो छैल वही तौ अहीर को,
पीर हमारे हिए की हरैगो॥

(१०२)

दूर तें आइ दुरेहीं दिखाइ,
अटा चढ़ जाइ कह्यो तहाँ वारौ।
चित्त कहूँ चितवै कितहूँ चित,
और सों चाहि करै चखवारौ॥
'रसखानि' कहै यह बीच अचानक,
जाइ सिढ़ी चढ़ि सास पुकारौ।
सूखि गई सुकवार हियो,
हनि सैन भटू कह्यौ स्याम सिधारौ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(९९)

संपति सों सकुचाइ कुबेरहिं,
रूप सों दीनी चिनौती अनंगहिं ।
भाग कै कै ललचाइ पुरंदर,
जोग कै गंग लई धरि मंगहि ॥
ऐसे भए तो कहा 'रसखानि'
रसै रसना जो मुक्ति तरंगहि ।
दै चित ताकै न रंग रच्यो,
जु रह्यो रचि राधिका रानी के रंगहि ॥

(१००)

द्रौपदी औ गनिका गज गीध,
अजामिल सों कियो सो न निहारो ।
गौतम गेहनी कैसी तरी,
प्रह्लाद को कैसे हर्यो दुख भारो ॥
काहे कों सोच करै 'रसखानि'
कहा करिहैं रविनंद विचारो ।
ता खन जा खन राखिए माखन,
चाखनहार सो राखनहारो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१०५)

सार की सारी सी भारी लगै,
धरिबे कंह सीस बघंबर पैया ।
हांसी सो दासी सिखाइ लई हैं,
वेई जु वेई 'रसखानि' कन्हैया ॥
जोग गयो कुबजा की कलानि मैं,
री कब ऐहैं जसोमति मैया ।
हा हा न ऊधौ कुढ़ावो हमैं,
अबहीं कहि दै ब्रज बाजै बधैया ॥

(१०६)

को रिझवारिन कों 'रसखानि'
कहै मुकतानि सों मांग भरौंगी ।
कोऊ कहै गहनो अँग अंग,
दुकूल सुगंध भर्यो पहरौंगी ॥
तू न कहैं यों कहैं तो कहौं हूँ,
कहूँ न कहूँ तेरे पाँय परौंगी ।
देखहु याहि सुफूल की माल,
जसोमति लाल निहाल करौंगी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१०३)

कंस के क्रोध की फैल गई,
जब ही ब्रजमंडल बीच पुकार सी।
आइ गए तबही कछनी,
कसिकै नटनागर नंदकुमार सी॥
द्वैरद को रद ऐंचि लियो,
'रसखानि' इहै मन आइ बिचार सी।
लागी कुठौर लई लखि तोर,
कलंक तमाल तें कीरत डार सी॥

(१०४)

लोग कहैं ब्रज के 'रसखानि'
अनंदित नंद जसोमति जू पर।
छोहरा आजु नयो जनम्यो,
तुमसो कोऊ भाग भर्यो नहिं भू पर॥
वारिकै दाम संवार करौं,
अपने अपचाल कुचाल ललू पर।
नाचत रावरो लाल गुपाल सो,
काल सो ब्याल-कपाल के ऊपर॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१०९)

तू गरबाइ कहा झगरै,
　　'रसखानि' तेरे बस बावरो होसै ।
तौहूँ न छाती सिराइ अरी,
　　करि झार इतै उतै बाझन कोसै ॥
लालहि लाल किए अँखियाँ,
　　गहि लालहि काल सों क्यों भई रोसै ।
ऐ बिधिना तू कहा री पढ़ी,
　　बस राख्यो गुपालहि लाल भरोसै ॥

(११०)

एक समै इक लालनि कों,
　　ब्रजजीवन खेलत दृष्टि पर्यौ है ।
बाल प्रवीन सकै करिकै,
　　सरकाइ कै मोर न चीर धर्यौ है ॥
यों रसही रसही 'रसखानि'
　　सखी अपनो मनभायौ कर्यौ है ।
नंद के लाड़िले ढाकि दै सीस,
　　हहा हमरो वर हाथ भर्यौ है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१०७)

देखिहौं आँखिन सों पिय को,
अरु कानन सों उन बैन कों प्यारी ।
बांके अनंगनि रंगनि की,
सुरभी न सुगंधनि नाक में डारी ॥
त्यों 'रसखानि' हिए में धरौं,
वहि साँवरी मूरति मैं न उजारी ।
गाँव भरो कोउ नाम धरौ,
पुनि साँवरी हौं बनिहौं सुकुमारी ॥

(१०८)

काह कहूँ रतियां की कथा,
बतियां कहि आवत है न कछू री ।
आइ गोपाल लियो भरि अंक,
कियो मन भायो पियो रस कूंरी ॥
ताहि दिना सों गड़ीं अंखियाँ,
'रसखानि' मेरे अंग अंग में पूरी ।
पै न दिखाई परै अब बावरो,
दै के वियोग बिथा की मजूरी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(११३)

लीने अबीर भरे पिचका,
'रसखानि' खरो बहु भाय भरो जू ।
मार से गोप कुमार कुमार से,
देखत ध्यान टरो न टरो जू ॥
पूरब पुन्यनि हाथ पर्यौ तुम,
राज करौ उठि काज करो जू ।
ताहि सरौ लखि लाख जरौ,
इहि पाख पतिब्रत ताख धरो जू ॥

(११४)

जाहु न कोऊ सखी जमुना जल,
रोकै खड़ो मग नंद को लाला ।
नैन नचाइ चलाइ चितै,
'रसखानि' चलावत प्रेम को भाला ॥
मैं जु गई हुती बैरन बाहिर,
मेरी करी गति टूटि गो माला ।
होरी भई कै हरी भए लाल,
कै लाल गुलाल पगी ब्रजबाला ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१११)

सोई हुती पिय की छतियां लगि,
बाल प्रवीन महा मुद मानै ।
केस खुले छहरैं बहरैं,
कहरैं छबि देखत मैन अमानै ॥
वा रस मैं 'रसखानि' पगी,
रति रैन जगी अंखियाँ अनुमानै ।
चंद पै बिंब औ बिंब पै कैरव,
कैरव पै मुकतान प्रधानै ॥

(११२)

आवत लाल गुलाल लिए,
मग सूने मिली इक नार नवीनी ।
त्यों 'रसखानि' लगाइ हिए,
भटू मौज कियो मन माहिं अधीनो ॥
सारी फटी सुकुमारी हटी,
अंगियां दरकी सरकी रँग भीनी ।
लाल गुलाल लगाइ लगाइ कै,
अंक रिझाइ बिदा कर दीनीं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(११७)

वह देख धतूरे के पात चबात,
औं गात सों धूली लगावत हैं ।
चहुँ ओर जटा अंटकैं लटकैं,
फनि सेंक फनी फहरावत हैं ॥
'रसखानि' जेई चितवै चित दै,
तिनके दुख दुंद भजावत हैं ।
गजखाल कपाल की माल बिसाल,
सो गाल बजावत आवत हैं ॥

(११८)

बैद की औषधि खाइ कछू,
न करै वह संजम री सुनि मोसें ।
तो जलपान कियो रसखानि',
सजीवन जानि लियो सुख तोसें ॥
एरी सुधामयी भागीरथी,
निपतत्थि बनै न सनै तुहि पोसें ।
आक धतूर चबात फिरै,
बिष खात फिरै सिव तेरे भरोसें ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(११५)

फागुन लाग्यो सखी जब तें,
तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यो है।
नारि नवेली बचैं नहिं एक,
बिसेख यहै सबै प्रेम अच्यो है॥
साँझ सकारे वही 'रसखानि'
सुरंग गुलाल लै खेल रच्यो हैं।
को सजनी निलजी न भई,
अरु कौन भटू जिहिं मान बच्यो है॥

(११६)

इक ओर किरीट लसै दुसरी दिसि,
नागन के गन गाजत री।
मुरली मधुरी धुनि ओठन पै,
उत डामर नाद से बाजत री॥
'रसखानि' पितंबर एक कँधा पर,
एक बघंबर राजत री।
कोउ देखहु संगम लै बुड़की,
निकसे यह भेख बिराजत री॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१)

प्रेम अयनि श्री राधिका, प्रेम-बरन नंदनंद ।
'प्रेमबाटिका' के दोऊ, माली-मालिन-द्वंद ॥

(२)

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोय ।
जो जन जानै प्रेम तो, मरे जगत क्यों रोय ॥

(३)

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर-सरिस बखान ।
जो आवत एहि ढिग बहुरि, जात नाँहि रसखान ॥

(४)

प्रेम-बारुनी छानिकै, बरुन भए जलधीस ।
प्रेमहि ते बिष पान करि, पूजे जात गिरीस ॥

(५)

प्रेम-रूप दर्पन अहो, रचै अजूबो खेल ।
यामें अपनो रूप कछु, लखि परिहैं अनमेल ॥

(६)

कमलतंतु सो छीन अरु, कठिन खड़ग की धार ।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेम-पंथ अनिवार ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(११९)

कंचन मंदिर ऊँचे बनायकै,
मानिक लाय सदा झमकावै ।
प्रातहि ते सगरी नगरी गज,
मोतिन ही की तुलानि तुलावै ॥
पालै प्रजानि प्रजापति सो,
धन संपति सों मघवाहि लजावै ।
ऐसो भयो तो कहा 'रसखान',
जु साँवरे ग्वाल सों नेह न लावै ॥

(१२०)

बैन वही उनको गुन गाइ,
औ कान वही उन बैन सों सानी ।
हाथ वही उन गात सरै,
अरु पाइ वही जु वही अनुजानी ॥
जान वही उन प्रान के संग,
औ मान वही जु करै मनमानी ।
त्यौं 'रसखानि' वही रसखानि,
जुहै रसखानि सो है रसखानी ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१३)

शास्त्रन पढ़ि पंडित भए, कै मौलवी कुरान।
जुपै प्रेम जान्यौ नहीं, कहा कियो 'रसखान' ॥

(१४)

काम, क्रोध, मद, मोह, भय, लोभ, द्रोह, मात्सर्य।
इन सब हीं तें प्रेम है, परे, कहत मुनिवर्य ॥

(१५)

बिनु गुन जोबन रूप धन, बिनु स्वारथ हित जानि।
शुद्ध, कामना तें रहित, प्रेम सकल-रसखानि ॥

(१६)

अति सूछम कोमल अतिहि, अति पतरो अति दूर।
प्रेम कठिन सब तें सदा, नित इकरस भरपूर ॥

(१७)

जग मैं सब जान्यौ परै, अरु सब कहै कहाय।
पै जगदीसऽरु प्रेम यह, दोऊ अकथ लखाय ॥

(१८)

जेहि बिनु जाने कछुहि नहिं, जान्यो जात बिसेस।
सोई प्रेम, जेहि जानि कै, रहि न जात कछु सेस ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(७)

लोक-वेद-मरजाद सब, लाज-काज-संदेह ।
देत बहाए प्रेम करि, बिधि निषेध को नेह ॥

(८)

कबहुँ न जा पथ भ्रम तिमिर, रहै सदा सुखचंद ।
दिन दिन बाढ़त ही रहै, होत कबहुँ नहि मंद ॥

(९)

भले वृथा करि पचि मरौ, ज्ञान-गरूर बढ़ाय ।
बिना प्रेम फीको सबै, कोटिन किए उपाय ॥

(१०)

श्रुति, पुरान, आगम, स्मृतिहि, प्रेम सबहि को सार ।
प्रेम बिना नहि उपज हिय, प्रेम बीज अंकुवार ॥

(११)

आनंद अनुभव होत नहिं, बिना प्रेम जग जान ।
कै वह विषयानंद, कै, ब्रम्हानंद बखान ॥

(१२)

ज्ञान, कर्मरुपासना, सब अहमिति को मूल ।
दृढ़ निहचय नहिं होत बिन, किए प्रेम अनुकूल ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२५)

ज्ञान, ध्यान, विद्या, मती, मत, विश्वास, विवेक ।
बिना प्रेम सब धूर हैं, अग जग एक अनेक ॥

(२६)

प्रेमफांस मैं फंसि मरै, सोई जिए सदाहिं ।
प्रेम मरम जाने बिना, मरि कोउ जीवत नाहिं ॥

(२७)

जग मैं सबतें अधिक अति, ममता तनहिं लखाय ।
पै या तनहूँ ते अधिक, प्यारो प्रेम कहाय ॥

(२८)

जेहि पाए बैकुंठ अरु, हरिहू की नहिं चाहि ।
सोइ अलौकिक, सुद्ध, सुभ, सरस, सुप्रेम कहाहि ॥

(२९)

कोउ याहि फाँसी कहत, कोउ कहत तरवार ।
नेजा, भाला, तीर कोउ—कहत अनोखी ढार ॥

(३०)

पै मिठास या मार के, रोम रोम भरपूर ।
मरत जियै, झुकतो थिरै, बनै सु चकनाचूर ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(१९)

दंपति सुख अरु विषयरस, पूजा, निष्ठा, ध्यान ।
इनतें परे बखानिये, शुद्ध प्रेम 'रसखान' ॥

(२०)

मित्र, कलत्र, सुबन्धु, सुत, इनमें सहज सनेह ।
शुद्ध प्रेम इन में नहीं, अकथ कथा सबिसेह ॥

(२१)

इकअंगी बिनु कारनहिं, इकरस सदा समान ।
गनै प्रियहि सर्वस्व जो, सोई प्रेम प्रमान ॥

(२२)

डरै सदा, चाहै न कछु, सहै सबै जो होय ।
रहै एकरस चाहि कै, प्रेम बखानौ सोय ॥

(२३)

प्रेम प्रेम सब कोउ कहै, कठिन प्रेम की फांस ।
प्रान तरफि निकरै नहीं, केवल चलत उसांस ॥

(२४)

प्रेम हरी को रूप है, त्यों हरि प्रेमसरूप ।
एक होइ द्वै यों लसैं, ज्यौं सूरज अरु धूप ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(३७)

वेद—मूल सब धर्म, यह, कहै सबै श्रुतिसार ।
परमधर्म है ताहु तें, प्रेम एक अनिवार ॥

(३८)

जदपि जसोदा नंद अरु, ग्वालबाल सब धन्य ।
पै या जग में प्रेम कौ, गोपी भई अनन्य ॥

(३९)

वा रस की कछु माधुरी, ऊधो लही सराहिं ।
पावै बहुरि मिठास अस, अब दूजो को आहि ॥

(४०)

श्रवन, कीर्तन, दरसनहिं, जो उपजत सोइ प्रेम ।
शुद्धाशुद्ध विभेद तें, द्वै विध ताके नेम ॥

(४१)

स्वारथ मूल अशुद्ध त्यों, शुद्ध स्वभावऽनुकूल ।
नारदादि प्रस्तार करि, कियो जाहि को तूल ॥

(४२)

रसमय, स्वाभाविक बिना—स्वारथ, अचल महान ।
सदा एकरस शुद्ध सोइ, प्रेम अहै 'रसखान' ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(३१)

पै एतो हूँ हम सुन्यो, प्रेम अजूबो खेल ।
जांबाजी बाजी जहाँ, दिल का दिल से मेल ॥

(३२)

सिर काटो छेदो हियो, टूक टूक करि देहु ।
पै याके बदले बिहंसि, वाह वाह ही लेहु ॥

(३३)

अकथ—कहानी प्रेम की, जानत लैली खूब ।
दो तनहूँ जहं एक भे, मन बिलाइ महबूब ॥

(३४)

दो मन इक होते सुन्यो, पै वह प्रेम न आहि ।
होइ जबै द्वै तनहुँ इक, सोई प्रेम कहाहि ॥

(३५)

याही तें सब मुक्ति तें, लही बड़ाई प्रेम ।
प्रेम भए, नस जाहि सब, बँधे जगत के नेम ॥

(३६)

हरि के सब आधीन पै, हरी प्रेम आधीन ।
याही ते हरि आपुहीं, याहि बड़प्पन दीन ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४९)

प्रेम निकेतन श्री बनहिं, आइ गोवर्धन-धाम ।
लह्यो सरन चितचाहिकै, जुगलसरूप ललाम ॥

(५०)

तोरि मानिनी तें हियो, फोरि मोहनी-मान ।
प्रेमदेव की छबिहि लखि, भए मियाँ, 'रसखान' ॥

(५१)

बिधु, सागर, रस, इंदु सुभ, बरस सरस रसखानि'।
'प्रेमबाटिका' रचि रुचिर, चिर हिय हरख बखानि ॥

(५२)

अरपी श्रीहरिचरनजुग, पदुमपराग निहार ।
बिचरहिं यामें रसिकवर, मधुकर-निकर अपार ॥

(५३)

राधामाधव सखिन सँग, बिहरत कुंज-कुटीर ।
रसिकराज 'रसखानि' जहं, कूजत कोइल कीर ॥

(५४)

मोहनछबि 'रसखानि' लखि, अब दृग अपने नाहिं ।
ऐंचे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहिं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(४३)

जाते उपजत प्रेम सोइ, बीज कहावत प्रेम ।
जामे उपजत प्रेम सोइ, क्षेत्र कहावत प्रेम ॥

(४४)

जातें पनपत, बढ़त, अरु, फूलत फलत महान ।
सो सब प्रेमहिं प्रेम यह, कहत रसिक 'रसखान' ॥

(४५)

वही बीज, अंकुर वही, एक वही आधार ।
डाल पात फल फूल सब, वही प्रेम सुखसार ॥

(४६)

जो, जातें, जामें, बहुरि, जाहित कहियत बेस ।
सो सब प्रेमहिं प्रेम है, जग 'रसखान' असेस ॥

(४७)

कारज-कारन-रूप यह, प्रेम अहै 'रसखान' ।
कर्ता, कर्म, क्रिया, करण, आपहि प्रेम बखान ॥

(४८)

देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान ।
छिनहि बादसा-बंस की, ठसक छोरि 'रसखान' ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(६१)

स्याम सघन घनघोरि कै, रस बरस्यो 'रसखानि'।
भई दिमानी पान करि, प्रेम महा मनमानि॥

(६२)

तू आई गौने नई, अरी अनोखी बाम।
है छलिया तुव ताक मैं, बाहर धरसि न पाम॥

(६३)

बिमल सरल 'रसखानि' मिलि, भई सकल रसखानि।
सोई नव रसखानि कों, चित चातक रसखानि॥

(६४)

सरस नेह लवलीन नव, द्वै "सुजान रसखानि"।
ताके आस बिसास सों, पगे प्रान 'रसखानि'॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(५५)

मो मन मानिक लै गयो, चितै चोर नँदनंद ।
अब वे मन मैं का करूँ, परी फेर के फंद ॥

(५६)

मोहन सुंदरश्याम को, देख्यो रूप अपार ।
हिय जिय नैननि मैं बस्यो, वह ब्रजराज कुमार ॥

(५७)

मन लीनो प्यारे चितै, पै छटांक नहिं देत ।
यहै कहा पाटी पढ़ी, दल को पीछो लेत ॥

(५८)

ए सजनी लोनो लला, लह्यो नंद के गेह ।
चितयो मृदु मुसकाइ कै, हरी सबै सुधि गेह ॥

(५९)

भयो अजानहिं जान कै, एरी चतुर सुजान ।
जान आपनी जान कों, तजि दीनी पहिचान ॥

(६०)

जोहन नंदकुमार कों, गई नंद के गेह ।
मोहि देखि मुसिकाइ कै, बरस्यो मेह सनेह ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० १०—याही गांयरे को जायो = इसी गाँव में उत्पन्न हुआ। कानि = लोकलाज। लोचन नचावत = आँखें फरकाना। बगर = हाथ। गहै डगर हमारी = हमारी रास्ता रोकता है।

छन्द नं० ११—ढोंटा = लड़का। तरनि तनूजा = यमुना। दुरावहीं = छिपाते हैं।

छन्द नं० १२—अनग = कामदेव। धमारि = गायन विशेष की ताल।

छन्द नं० १३—चांचरि = गायन विशेष।

छन्द नं० १४—पुरंदर = इन्द्र।

छन्द नं० १५—वारौं = निछावर कर दूं। कलधौत = सोना।

छन्द नं० १६—भावतोपति = चाहा हुआ पति। लकुटी = छड़ी।

छन्द नं० १७—चबाव = कलंक की चर्चा।

छन्द नं० १८—त्रिलोचन = भगवान शंकर। छोहरियां = लड़कियाँ। छछिया भरि छाँछ = थोड़े से मट्ठे के लिये।

छन्द नं० १९—अनुरागें = प्रेम से। गेरत = डालते हैं।

छन्द नं० २०—निसिद्योस = दिन रात। दीह है = जलाती रहेगी।

छन्द नं० २१—रजनी = रात। अहेरी = शिकार करने वाली। निसिरंग = कामकला का आनन्द।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परशिष्ट टिप्पणी

छन्द नं० १—सनेह सरसाइबो = प्रेम करना। निपट = बिल्कुल। कलिन्दी तीर = जमुना के निकट। चंद हाथन छिपाइबो = किसी रहस्य को गुप्त रखना।

छन्द नं० २—बंक चितवन = तिरछी निगाह से देखना। तटिनी = नदी (जमुना)। तनतपन = बिरह ज्वाला।

छन्द नं० ३—खिरकि = पशुशाला। बावरी = विक्षिप्त सी। दोहनी = दुग्ध दुहने का बर्तन। पानि = हाथ। सयाने = नाउत। धाय = धात्री। खोरि = गली।

छन्द नं० ४—नेकु = थोड़ी भी। सौंह = शपथ। सकात = सकोच करना। लटक-अदा।

छन्द नं० ५—सीरो = ठंडा। तरुनवारी = युवती और कन्यायें। बगराइगो = फैला गया। छोहरा = लड़का।

छन्द नं० ६—अधर = ओंठ। अचेत = सज्ञाहीन। परि-धान = वस्त्र। युगुति = उपाय।

छन्द नं० ७—मर्कत = हरित मणिविशेष, पन्ना।

छन्द नं० ८—सुमार = गणना। छार = भस्म। लवार = झूठा, कहा साधे। पंचानल = पंचाग्नि तापने से कोई लाभ नहीं।

छन्द नं० ९—प्रतिहार = द्वारपाल। लालमानिक उजारे सों = रत्न राशि के प्रकाश से। पीत पटवारे = पीताम्बर धारी भगवान कृष्ण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० ३२—गोरज = गोलोचन, खुररेणु।

छन्द नं० ३३—बरुनी = पलकैं। सुथरी = साफ। रातो = लाल।

छन्द नं० ३४—उच्चरिबो = कहना। सी करिबो = सिसकारी भरना।

छन्द नं० ३५—मार = कामदेव. चोट। घूँटेउ = पीकर।

छन्द नं० ३६—सतदामिनी की दुति लाजत हैं = सैकड़ों विद्युत छटाओं का प्रकाश मंद पड़ता है।

छन्द नं० ३७—खरी = अच्छी। ऐन = घर। बीथी = गली। गोहन = ढूंढ़ना।

छन्द नं० ३८—सयाने = चतुर, नाउत। सुगाइ कै = संदेह करके।

छन्द नं० ३९—लुगायन = स्त्रियों ने। पलोटत = दबाना, लोटना।

छन्द नं० ४०—अमीनिधि बोलनआछे = अमृत के समान मधुर वचन। कटाछैं = भौं चलाना। काछनी काछे = कस कर घुटनों से ऊपर धोती पहने हुए।

छन्द नं० ४१—सैन = इशारा (आँख से)।

छन्द नं० ४२—पचिहारे तंग आगये।

छन्द नं० ४३—अबार = देर। चतुरानन = ब्रह्मा।

छन्द नं० ४४—दुकूल = वस्त्र। चटको = सोख रंग का। पैजनी = पैरों में पहनने का आभूषण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० २२—ठगोरी = मन को मोह लेना। लाज बिदा करि दीन्ही = लज्जा को तिलाञ्जलि दे दी। लट्टू = मोहिता लट्टू हो जाना।

छन्द नं० २३—डिठौनहिं = टीका। छोहनहिं = बच्चे को।

छन्द नं० २४—प्रानहुवारे = ज़ीवन न्योछावर करने पर भी = लाख चेष्टा करने पर भी। हलाहल = कालकूट।

छन्द नं० २५—अति = अत्याचार। भाजन = पात्र। दुहाई = शपथ। मरूकरि = बड़ी कठिनाई से।

छन्द नं० २६—जोहन = देखना!

छन्द नं० २७—पति हीं = लोक मर्यादा को = प्राणनाथ को। पखेरू = पक्षी।

छन्द नं० २८—औ = अटकता है, छेड़ता है। नागरि = चतुर सखी। रौरि = हुल्लड़।

छन्द नं० २९—कछोटी = जांघिया।

छन्द नं० ३०—चेटक = जादू, टोना।

छन्द नं० ३१—मौड़ी = लड़की। भतरौंड = वृन्दावन और मथुरा के बीच एक स्थान जहां पर एक मन्दिर बना हुआ है और बरसात में यमुना बढ़कर यहां पर आ जाती है। मूल चढ़ै = आग्रह करे। भटू = सखी। औंडी = बढ़ी हुई। कनौड़ी = आभारी, कलंकित। डौंड़ी = डुग्गी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० ६२—ख्वारी = बदनामी।

छन्द नं० ६३—हुलस्यो = प्रसन्न हुआ। अजान = मूर्ख।

छन्द नं० ६४—हौं = मैं।

छन्द नं० ६५—बीर = सखी। बिकाइ गयो = मुग्ध होगया।

छन्द नं० ६६—गाढ़ परै = कष्ट पड़ने पर। तजिपाँय धरो = समझ बूझ कर चलो।

छन्द नं० ६७—उसासन सों = डाट फटकार से। कांतिन सों = तीव्र व्यंग्य से।

छन्द नं० ६८—बरज्यो = मना किया।

छन्द नं० ६९—हौंसन = अभिलाषाओं से। बिहाल करी = व्यथित किया।

छन्द नं० ७०—नंद ढुठौना = बालकृष्ण। रढ़ै गो = बार बार कहेगा।

छन्द नं० ७१—दुंहुँधां की = दोनों ओर की।

छन्द नं० ७२—मिस = बहाने से।

छन्द नं० ७३—ऐना = घर।

छन्द नं० ७४—पौरि = दहलीज, बरोठा, घर। पहार भई = कठिन हो गया।

छन्द नं० ७६—निसंक ह्वै क्यों नहिं अंक लगावत = बेधड़क क्यों नहीं भेंटती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० ४५—दीरघलोचन = बड़ी बड़ी आँखें। गंडनि पै = कपोलस्थली पर। ईखतहाँस = थोड़ा हंसना, मंदहास।

छन्द नं० ४६—नखी = उल्लंघन किया। मेड़ = मर्य्यादा। पलके पटसों = पलकरूपी वस्त्र। लटकी लट सों = भगवान कृष्ण से।

छन्द नं० ४८—लोल = चंचल। रिझई = प्रसन्न किया।

छन्द नं० ४९—छटा शोभा। कुलकानि कटा = लोक लाज का संहार।

छन्द नं० ५१—झेलिसके = सह सके। तीछन कोर = नुकीला किनारा। द्रुम = वृक्ष। कुन्तल = बाल और भाला।

छन्द नं० ५२—अनियारी = नुकीली। हेतु को बन्धन = प्रेम का सम्बन्ध।

छन्द नं० ५३—टटको = ताजा, नया। भटक्यो = भ्रमे हुए।

छन्द नं० ५७—आरज लाज बड़ाई = सभ्यजने चितशाली नता और गौरव।

छन्द नं० ५८—बावरी = पगली। हेरनि = देखना। पैंड़ = मार्ग, रास्ता।

छन्द नं० ६०—ब्रज डाबरियाँ = ब्रजबासिनी गोपाँगनायें।

छन्द नं० ६१—बानिक = वेष से। बन्दौं = मानौं, प्रशंसा करूं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० ८९—परयंक = पलका।

छन्द नं० ९०—गाड़रू = साँप का विष झाड़ने वाला।

छन्द नं० ९१—सतटूक = खण्डखण्ड। चेरी को चेरो = कुब्जा का दास।

छन्द नं० ९२—बकोटती = उँगलियों से नोचती।

छन्द नं० ९३—कहा पढ़ि माई = कौनसा जादू करके।

छन्द नं० ९५—उकसाय दई = बढ़ादी। तरकी = कंचुकी के वंद।

छन्द नं० ९७—मघवा = इन्द्र। प्रभुता = ऐश्वर्य।

छन्द नं० ९८—चुनौती = प्रचारना। मंगहिं = महादेव को। रचि = रँग में रँगा हुआ।

छन्द नं० १०२—द्वैरद को रद = हाथी का दाँत। तमाल = एक काले रंग का वृक्ष विशेष।

छन्द नं० १०३—भागभरो = सौभाग्यशाली। अपचाल कुचाल ललू पर = अपने कुचाली पुत्र पर। व्याल कपाल = कालीनाग के फण पर।

छन्द नं० १०८—गरवाय = अहंकार करके। छाती सिराय = दिल ठंडा होय।

छन्द नं० ११२—यहि पाख = इस पक्ष में, होली में।

छन्द नं० ११३—मेरी करी गति = मेरी बुरी दशा की।

छन्द नं० ११५—त्रिबेणी पर स्नान करने से प्राणियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

छन्द नं० ७७—औचक दृष्टि परे=अचानक दिखाई पड़े। अनुरागी=प्रेम में पगी हुई।

छन्द नं० ८०—चितचाही=मनमानी। हहा पिया की तियकी नहिं नाहीं=भगवान कृष्ण की आग्रहपूर्वक बिनती करना और राधिका का निषेध करना।

छन्द नं० ८१—नैसुक=थोड़ासा। मनुहारिहू=मनाने पर भी। सूधे चितौतना=सीधे देखते भी नहीं। लंगर मोड़ो=ढीठ लड़का।

छन्द नं० ८२—लच्यौपैलच्यौरी=विवश हुआ।

छन्द नं० ८३—चीर गहैं=वस्त्र पकड़ने पर। चीर=दूध। अचैहौ=पान करोगे। चाखन के मिस=खाने के बहाने। बात बढ़ैहौ=झगड़ा खड़ा करोगे। गोरस=दही, इन्द्रियों का रस।

छन्द नं० ८४—हिरवाइदे=ढुंढ़वा दे।

छन्द नं० ८५—दिखावति आँखि=क्रोध करते हैं। तगा=धागा।

छन्द नं० ८६—दानी=चुंगी निकालने वाले। दान=टेक्स। छरा=नारा।

छन्द नं० ८७—निलजी=निर्लज्जता की बात। सिगरी बिथा=हृदय का परिताप। कियो मनभायो=मनमाना किया।

छन्द नं० ८८—अपाङ्गनि=पलकों की। आतप=कामग्नि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सचित्र सन्ध्यायोग

खरीदिये

सन्ध्या एक ऐसी चमत्कारपूर्ण क्रिया है जिसका गुणगान सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से लेकर बड़े बड़े ब्रह्मर्षि तथा देवर्षि तक करते हैं। सन्ध्या गायत्री के ही बल पर घोर जंगलों में ऋषिगण राजसी सुख भोगते थे। उपवीत द्विजाति के लिये सन्ध्या न करना आत्म हत्या करना बराबर है। यह पुस्तक सन्ध्या के अनेक चमत्कारपूर्ण ज्ञातव्यों से पूर्ण है। यही एक पुस्तक है जिसके सम्बन्ध में अंगरेजी का प्रसिद्ध दैनिक लीडर लिखता है:—

"……The book deserves to find a place in every Hindu home. The chapters on *Gayatri Bhakton Ke Anubhav* and *Science of jap* are very interesting and instructive and throw new light on the subject.

"……प्रत्येक यज्ञोपवीत धारण करने वाले द्विजाति को इस पुस्तक को उसी तरह रखना चाहिये जिस तरह ईसाई बाइबिल और मुसलमान क़ुरान रखता है। सन्ध्या के ऊपर ऐसी उत्तम और मौलिक पुस्तक निकलने से हिन्दी-भाषा के भंडार की बढ़ती हुई है। आज यदि राजा भोज का राज्य होता तो मुझे पूर्णविश्वास है कि एक इसी पुस्तक की बदौलत लेखक महोदय निहाल हो जाते। इस पुस्तक को पढ़ कर सन्ध्या करने के लिये अपने आप इच्छा होती है। मूल्य १॥)

—देशदूत

भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को कृष्ण भगवान और शंकर के दर्शन होते हैं।

छन्द नं० ११९—निपत्थित = कुपथ्य आहार करना। संयम = पथ्य से रहना।

छन्द नं० १२०—अनुजानी = पीछे चलना।

दोहा नं० १२१—द्वन्द = जोड़ा।

दोहा नं० १२३—अनुपम = बेजोड़। अमित = बहुत।

दोहा नं० १२४—प्रेमबारुणी = प्रेम की मदिरा।

दोहा न० १२६—कमलतन्तु सो छीन = मृणाल के डोरों के समान पतला।

दोहा नं० १२८—भ्रमतिमिर = भ्रान्ति का अन्धकार। मंद = प्रकाशहीन।

दोहा नं० १३३—अहमित = अहंकार।

१ ७ ६ १

दोहा नं० १४९—विधु सागर रस इन्दु सुख = संवत १६७१।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा को

दो अनुपम मौलिक कृतियाँ

वारिन हेस्टिंग्ज २।) **राबर्ट क्लाइव** ।।।)

उपरोक्त दोनों महाशय भारतवर्ष में अंग्रेज़ी साम्राज्य की जड़ जमाने वाले कहे जाते हैं। ये दोनों महाशय आरम्भ में ईस्ट इंडिया कम्पनी में क्लर्क थे। क्लर्की से उन्नति करके बारी से ये दोनों महाशय तत्कालीन भारत के अंग्रेज़ी राज्य के सर्व प्रधान शासक हो गये। इन पुस्तकों को पढ़ कर एक तरफ़ तो एक छोटे आदमी और जाति की उन्नति का आनन्द और दूसरी तरफ़ एक सबसे बड़े आदमी और जाति की अवनति का हृदय विदारक दृश्य दिखाई देता है। हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य स्थापित करने के लिये हेस्टिंग्ज और क्लाइव ने किस तरह नवाबों और बादशाहों को धोखा दिया, कुटिल नीति की चालें खेलीं और अन्याय किया, इसका पता इन पुस्तकों से लगता है। इन पुस्तकों के पढ़ने से कहीं घृणा, आश्चर्य, कहीं रोना, कहीं पछताना और कहीं अफ़सोस होता है। इन पुस्तकों को आरम्भ करके बिना समाप्त किये आप नहीं छोड़ सकते। ऐतिहासिक पुस्तक होते भी आपको इन पुस्तकों में उपन्यासों का आनन्द आवेगा। भारतवर्ष का प्रारम्भिक अंग्रेज़ी इतिहास एक पढ़ने की चीज़ है जो इन दो जीवनियों के पढ़ने से चित्र की तरह सामने खड़ा हो जाता है।

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिमालयवासी प्रसिद्ध योगी स्वामी शिवानन्द सरस्वती द्वारा लिखित

सचित्र

योगासन और अक्षय युवावस्था

एकाग्र मन सारी सिद्धियों का भण्डार है। बिना शरीर को स्थिर किये मन भी स्थिर नहीं हो सकता। शरीर को स्थिर रखने का एकमात्र उपाय आसन का अभ्यास है। आसन सिद्ध करके मनुष्य मानसिक सिद्धियों को ही नहीं पा सकता वरन कायिक सिद्धि अर्थात् अक्षय युवावस्था तक पा सकता है। उक्त पुस्तक में बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री और पुरुष सबके करने योग्य आसन हैं। १)

सचित्र

प्राणायाम और अनन्तशक्ति

ब्रह्माण्ड के समस्त चर और अचर प्राणियों में जो जीवनी शक्ति है और जिससे संसार में गति का संचार होता रहता है उस महान शक्ति नाम प्राण है। इस प्राण पर जो अधिकार प्राप्त कर लेता है वह सब कुछ कर सकता है। भीम के अपरिमित बल, बालि के अजेयत्व, हनुमानजी के समुद्र लंघन, भीष्म की इच्छा मृत्यु और नारद के आकाश गमन के रहस्य का यही भेद है। इस प्राण पर अधिकार पाने की विद्या का नाम ही प्राणायाम है। उसी विद्या का उपदेश एक अनुभवी तथा प्रामाणिक लेखक ने वैज्ञानिक रूप से इस पुस्तक में दिया है। १)

मिलने का पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज-प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिये उपयोगी पुस्तकें

*१-**खेल द्वारा शिक्षा**—लेखक श्रीयुत कृष्ण प्यारेलाल एम० ए० एल० टी० डिप्टी इंसपेक्टर आव स्कूल्स, यू० पी०। बच्चे खेलना स्वाभाविक पसंद करते हैं। खेल द्वारा ही उनको अच्छी शिक्षा दी जाने के अनुपम साधन। ॥-)

२-**व्यायाम शिक्षा**—लेखक श्रीयुत कृष्ण प्यारेलाल, एम० ए० एल० टी०, यू० पी० ऐजूकेशन सर्विस। पुस्तक का विषय नाम से प्रकट है। ।=)

३-**बालबुद्धिमाप**—श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, एम० ए० एल० टी०। शिक्षण पद्धति में बच्चों की बुद्धि का अन्दाज़ा लगा कर पढ़ाने में बड़ी सुविधा होती है। बुद्धि का अन्दाज़ा लगाने के अनेक साधनों से पूर्ण यह पुस्तक अध्यापक मात्र को अपने पास रखना चाहिये। ।-)

४-**शिक्षा में नवीन प्रयोग**—लेखक पं० दीनानाथ चतुर्वेदी, एम० ए०, एल० टी०, टी० डिप०। पाश्चात्य देशो में शिक्षण प्रणाली में अनेक उपयोगी प्रयोग सफलतापूर्वक किये गये हैं जिसके कारण आज दिन पाश्चात्य देशों के लोग शिक्षा में बहुत उन्नत हैं। पाश्चात्य देशों रह कर लेखक के अनुभूत नवीन प्रयोगों का संग्रह। अध्यापक मात्र के काम की पुस्तक। ॥।)

*५-**देशी और विदेशी खेल**—लेखक पं० काशीरामजी दुबे, बी० ए०, एल० टी०, पी० ई० एस० सुपरिन्टेन्डेन्ट फ़िज़िकल ट्रेनिङ्ग शिक्षा विभाग, यू० पी०। केवल विश्वविद्यालयों की परीक्षा पास करते जाना व्यर्थ है जब तक कि आपका शरीर नीरोग तथा स्वस्थ नहीं है। शारीरिक उन्नति मनुष्य के लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हमारी धर्म-ग्रन्थावली की उत्तमोत्तम

पुस्तकें पढ़िये

१—भक्त ध्रुव	।=)	१६—काँची	=)
२—भक्त प्रह्लाद	।=)	१७—मल्लिकार्जुन	=)
३—भक्त मीरा	।=)	१८—नागनाथ-बैजनाथ	=)
४—भक्त सूरदास	।=)	१९—घृष्णेश्वर	=)
५—भगवान राम	।=)	२०—नासिक-त्र्यंबकेश्वर	=)॥
६—भगवान कृष्ण	।=)	२१—भीमाशंकर—पूना	=)
७—भगवान बुद्ध	।=)	२२—द्वारिकापुरी	≡)॥
८—प्रयाग	।)	२३—सोमनाथ	=)
९—चित्रकूट	=)॥	२४—उज्जैन	=)
१०—अयोध्या	=)॥	२५—ओंकारेश्वर	=)
११—काशी	≡)॥	२६—मथुरा-वृन्दावन	≡)॥
१२—गया	=)॥	२७—हरिद्वार	=)॥
१३—वैद्यनाथ धाम	=)	२८—केदारनाथ	=)
१४—जगन्नाथ धाम	≡)॥	२९—बदरीनाथ	=)
१५—रामेश्वर	≡)॥	३०—इलाहाबाद गाइड	-)॥

३१—भारत के तीर्थ (पूर्वार्ध) चारों धाम, सप्तपुरी और उत्तराखंड २॥)

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज, प्रयाग ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आलोक पुस्तकमाला

इस पुस्तकमाला में सभी पुस्तकें आठ आने प्रति पुस्तक के हिसाब से मिलेंगी। सभी उपयोगी विषयों पर पुस्तकें निकाली जावेंगीं। सुलभ मूल्य में हिन्दी भाषा के विशाल साहित्य का आनन्द लीजिये। स्थायी ग्राहकों को पौने मूल्य में पुस्तकें दी जावेंगी। स्थायी ग्राहकों को ५) स्थायी ग्राहक बनने का शुल्क देना होगा और पुस्तकमाला की कम से कम बीस पुस्तकें अवश्य लेनी होगीं। नीचे लिखी पुस्तकें तयार हैं।

१—**स्मृतिशक्ति**—स्मरणशक्ति को पुष्ट करने के उपाय विद्यार्थियों, वकीलों और अध्यापकों के काम की पुस्तक।

२—**कविवर सोमनाथ की रासपंचाध्यायी**

३—**अन्तिम परिणाम (उपन्यास)**

४—**रसखान रत्नावली**—कविवर रसखान की रचनाओं का उत्तम संग्रह।

५—**बिहारी सतसई**

६—**सेनापति और उनका काव्य**

७—**कविवर वृन्द और उनकी सतसई**

८—**पद्माकर तरंग**

९—**ग्वाल विनोद**

१०—**भूषण और उनका काव्य**

---

* छप रही है।

मिलने का पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज-प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उतनी ही आवश्यक है जितनी मानसिक उन्नति। हाकी, फुटबाल आदि खेलों से लेकर कबड्डी आदि देशी खेल तथा टूर्नामेन्ट आदि सब खेल अपने २ नियमों के साथ चित्र देकर समझा दिये गये हैं। प्रत्येक स्कूल तथा क्लब में रहने योग्य पुस्तक। १)

६–हिन्दी वर्ण परिचय—दो भाग। प्रत्येक का मूल्य =) हिन्दी आरम्भ करने के साथ सनातन धर्म का बीज बच्चों में डालने की अनुपम पुस्तक।

***७–कोयले की खान से पार्लामेन्ट**—सुशिक्षा के बल बूते पर एक बहुत गरीब कोयले की खान में काम करने वाले मजूर का लड़का किस तरह मजूर से इंगलेंड की पार्लामेंट का सदस्य हो गया इसका बड़ा रोचक वर्णन। विलायत में चुनाव के अवसरों पर कैसे दाँव पेच खेले जाते हैं उनका रोचक हाल अवश्य पढ़िये। ।–)

८–कहानी पुष्पमाला—बच्चों के लिये मनोरंजक कहानियों का संग्रह। ।।।)

९–वैजयन्ती—पं० सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी "प्रशान्त" की कहानियाँ बड़ी मनोरंजक होती हैं। उन्हीं की कतिपय उत्कृष्ट कहानियों का संग्रह। १)

धार्मिक पुस्तकें

विष्णु सहस्रनाम नारायणाष्टक और रुद्र शाप मोचन सहित –)।।

पुरुषसूक्तादि सूक्तत्रयम –)।।

शालिग्राम शिलार्चन –)।।

ईशावास्योपनिषद—दंडी स्वामी महादेवाश्रम जी द्वारा किये सरल हिन्दी अर्थ सहित =)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२।) में ३० किताबें !!

हमारी लोकहितकारी पुस्तकमाला की प्रत्येक पुस्तक =) की है। कोई सी ३० पुस्तकों का सेट २।) में दिया जाता है। एक सेट के साथ इसी पुस्तकमाला की अन्य पुस्तकें -) प्रति पुस्तक के हिसाब मिल सकती हैं। इस पुस्तकमाला की जीवनियों में चरित्रनायक का चित्र और अधिकांश में उसके उपदेश भी हैं। बच्चों और कम पढ़े लोगों के चरित्र सुधार का अनूठा साधन है। निम्नलिखित पुस्तकें तैयार हैं।

छत्रपति शिवाजी,	गोस्वामी तुलसीदास
स्वामी रामतीर्थ	स्वामी शङ्कराचार्य
पृथ्वीराज चौहान	स्वामी विवेकानन्द
समर्थ रामदास	गुरु गोविन्दसिंह
गोपालकृष्ण गोखले	श्री रामानुजाचार्य
नेपोलियन बोनापार्ट	भगवान श्रीराम
चित्तरंजन दास	यादवेन्द्र श्रीकृष्ण
महाराणा प्रतापसिंह	सनातन शिक्षा,
रामकृष्ण परमहंस	मिचौनी
गौतम बुद्ध	सूर्य नमस्कार
महाराज रणजीत सिंह	हरिसिंह नलवा
गुरु नानक	लोकमान्य तिलक
अहिल्याबाई	महादाजी सेंधिया
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	महारानी लक्ष्मी बाई
मीराबाई	चित्तौर की कहानियाँ

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हिमालयवासी प्रसिद्ध योगी स्वामी शिवानन्द सरस्वती द्वारा लि

सचित्र

योगासन और अक्षय युवावस्

एकाग्र मन सारी सिद्धियों का भण्डार है। बिना शरीर
स्थिर किये मन भी स्थिर नहीं हो सकता। शरीर को स्थिर रख
का एकमात्र उपाय आसन का अभ्यास है। आसन सिद्ध कर
मनुष्य मानसिक सिद्धियों को ही नहीं पा सकता वरन कायि
सिद्धि अर्थात् अक्षय युवावस्था तक पा सकता है। उक्त पुस्त
में बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री और पुरुष सबके करने योग
आसन हैं। १)

सचित्र

प्राणायाम और अनन्तशक्ति

ब्रह्माण्ड के समस्त चर और अचर प्राणियों में जो जीवन
शक्ति है और जिससे संसार में गति का संचार होता रहता
उस महान शक्ति नाम प्राण है। इस प्राण पर जो अधिका
प्राप्त कर लेता है वह सब कुछ कर सकता है। भीम के अपरि
मित्त बल, बालि के अजेयत्व, हनुमानजी के समुद्र लंघन, भीष्म
की इच्छा मृत्यु और नारद के आकाश गमन के रहस्य का यही
भेद है। इस प्राण पर अधिकार पाने की विद्या का नाम ही
प्राणायाम है। उसी विद्या का उपदेश एक अनुभवी तथा प्रामा
णिक लेखक ने वैज्ञानिक रूप से इस पुस्तक में दिया है। १)

मिलने का पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज-प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE